—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अप्रैल, 2008 वर्ष 7 अंक 02

कार्यालय

मासिक सच्चा राही !

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231

e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9 / —
वार्षिक	रु० 100 / —
विशेष वार्षिक	रु० 500 / —
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

कर बन्दगी ख़ुदा की

मग़रूर क्यों है इतना, नादान होश में आ
करले यक़ीन दिल से, तू ख़ाक का है पुत्ला
ये हाथ पांव तेरे, तिन्के का हैं सहारा
देता है रिज़्क़ तुझ को परवरदिगार तेरा
कर बन्दगी ख़ुदा की, बन्दा है तू ख़ुदा का

आपके पते के साथ जो ख़रीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना ख़रीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

औलियाउल्लाह	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
कियामत		8
भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फर नदवी	9
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	12
हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी	इरफान नदवी फ़ारूकी	14
कब्र की जिन्दगी		15
हम कैसे पढ़ाएं	डा० सलामतुल्लाह	16
आहार से परिपूर्ण जैतून		19
मजदूर	मेराजुद्दीन	19
समाज सुधारक	सलमान अली खां	20
हंसी दुख का इलाह है	शमशेर आलम फतेपुरी	24
हदीसे जिब्रील		25
सभ्यताओं के युद्ध में विजेता कौन?	एन साकिब अब्बासी	26
दहशतगर्दी के खिलाफ उलमा की आवाज	हिसाम सिद्दीकी	28
रूस में इस्लाम का मैदान	अब्दुल हकीम	31
भ्रूण हत्या	विद्या प्रकाश	33
बवासीर का होम्योपैथिक इलाज	डॉ० एम०एम० आरिफीन	34
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्द	इदारा	35
नुबुव्वत खत्म हो चुकी है	इदारा	36
आबे जमजम	हकीम हामिद तहसीन	37
एक कादियानी का खत	इदारा	38
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

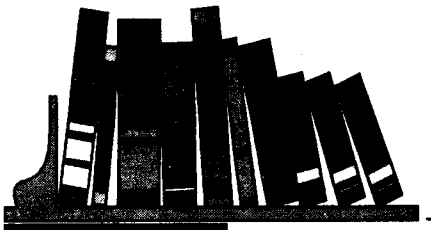

औलियाउल्लाह

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

"अला इन्न औलियाअल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम वला हुम यह्ज़नून् अल्लज़ीन आमनू व कानू यत्तक़ून। (पवित्र क़ुर्आन १०:६२,६३) अनुवाद : "जान लो जो लोग अल्लाह के दोस्त हैं उन पर न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे, यह वह लोग हैं जो ईमान लाये और तक़वा (संयम) इख़्तियार किया। "अल्लाहु वलिय्युल्लज़ीन आमनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमति इलन्नूरि" (अलबक़रः आयत २५७) अनुवाद : अल्लाह तआ़ला उन लोगों का दोस्त है जो ईमान लाए उन को (गुमराही की) अंधेरियों से निकाल कर (हक़ के) उजाले की तरफ़ लाता है। "वल्लाहु वलिय्युल् मुअ्मिनीन् (आलि इ्मरान : ६८) अनुवाद : अल्लाह ईमान वालों का दोस्त है।

वली अ़रबी लफ़्ज़ है जिसके कई मअ़्ना हैं, महब्बत (प्रेम) करने वाला, दोस्त (मित्र) मददगार (सहायक) पड़ोसी, ह़लीफ़ (सहप्रतिज्ञा) ताबिअ़ (अधीन) कारसाज़ (काम बनाने वाला) वह जो किसी के काम का मुन्तज़िम (व्यवस्थापक) हों, मुतीअ़ (आज्ञापालक)। वली की जमअ़ (बहुवचनन) औलिया है यह लफ़्ज़ जब अल्लाह पर बोला जाता है तो दोस्त, मददगार, कारसाज़ आदि के मअ़्ना लिये जाते हैं और जब बन्दों के लिए बोला जाता है तो महब्बत करने वाला, इताअ़त करने वाला, दोस्त संरक्षक आदि मअ़्ना लिये जाते हैं।

आज हम इस उ़नवान (शीर्षक) के तह़त (अंतर्गत) अल्लाह के दोस्तों पर कुछ कहना चाहते हैं।

सूर–ए–यूनुस की आयत ६२ में औलियाउल्लाह का एअ़ज़ाज़ (सम्मान) और उनके इनआ़मात (पुरस्कारों) का ख़ुलासा यह बताया गया है कि औलियाउल्लाह यअ़्नी अल्लाह के वलियों को न तो किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा न किसी क़िस्म का ग़म होगा। फिर आयत ६३ में उनकी ख़ास पहचान बताई गई है कि वह लोग ईमान वाले और तक़्वे की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले होंगे।" फिर अगली आयत ६४ में बताया गया है कि उन के लिये दुन्या की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत की ज़िन्दगी में भी बादशाहत और ख़ुशख़बरी है। और बताया गया कि अल्लाह की बातें बदला नहीं करतीं। यह बशारत (मंगल सूचना) ही बड़ी काम्याबी है।

ज़ाहिर है जो भी ईमान रखता है वह बशरीयत के तक़ाज़े से जितना भी गुनाहगार हो किसी ह़द तक अल्लाह की पकड़ से डर कर गुनाहों से बचता ही है, इस तरह़ हर ईमान वाला अल्लाह का वली है, इस का सुबूत क़ुर्आन में भी मौजूद है "अल्लाहु वलिय्युल् मुअ्मिनीन्" अल्लाह ईमान वालों का दोस्त है और अल्लाह जिस का दोस्त है वह अल्लाह का दोस्त है, यअ़्नी अल्लाह का वली है। लेकिन इस वलायत और दोस्ती के दरजात हैं इस दोस्ती में अअ़ला दर्जा अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का है, उनमें भी दरजात है जैसा कि क़ुर्आन ने ख़ुद बताया "तिल्कर्रसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्जहुम अ़ला बअ़्ज़्" यह जो पैग़म्बर हैं हमने इन में बअ़्ज़ को बअ़्ज़ पर फ़ज़ीलत अ़ता की है" चुनांचि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया "वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीम ख़लीला (अन्निसाअ : १२५) और अल्लाह ने इब्राहीम को दोस्त बनाया" इससे यह धोखा न हो कि

दूसरे अंबिया को अल्लाह ताअ़ला ने दोस्त नहीं बनाया, सारे अंबिया (अ़लैहिमुस्सलाम) अल्लाह तआ़ला के अअ़ला दर्जे के दोस्त हैं, ख़ुसूसियत जताने के लिए इब्राहीम (अ़०) का नाम ले लिया वरना अहादीस से साबित है और आयात में भी इशारा मिलता है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह की दोस्ती में भी सब से अअ़ला, महबूबे रब्बिल आ़लमीन हैं।

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बअ़द उन का इत्तिबाअ़ करने वाले मोमिनीन व मुस्लिमीन का दर्जा है, फिर इनमें जो जितना ज़ियादा मुत्तबिअ़ है उतना ही ऊंचा है, इनमें जिन लोगों ने ईमान के साथ अपने नबी को देखा उन का दर्जा बअ़द के मुत्तबिईन से ऊंचा है और जिस ने ईमान की हालत में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत की और मरते दम तक ईमान पर क़ाइम रहा यअ़नी सहाब–ए–किराम उनका दर्जा सब से ऊंचा है, उनमें भी दरजात हैं। हज़रात अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम तरतीब के साथ दर्जात रखते हैं यह सब औलियाउल्लाह हैं इन के बअ़द वलायत कसबी है यअ़नी जो जितना ज़ियादा ज़ुह्द व तक़वे और अअ़माले सलिहा वाला है वह उतना ही बड़ा वली है लेकिन कोई कितना ही बड़ा वली हो मगर सहाबी न हो तो किसी कम से कम दर्जे के सहाबी के बरारब नहीं हो सकता इस लिये कि ईमान की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत की इबादत की बराबरी बरसों की इबादत का मजमूआ़ भी नहीं कर सकता।

हदीसे क़ुद्सी पेश है जिसे हज़रत अबू हुरैरः (रज़ि०) ने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिस ने मेरे वली से दुशमनी की मैंने उस से एअ़लाने जंग कर दिया, मेरा बन्दा अपने फ़राइज़ की अदाएगी से मेरा क़ुर्ब हासिल करता है फिर (फ़राइज़ की अदाएगी के साथ) नवाफ़िल (के इज़ाफ़े) से मेरा (इज़ाफ़ी) क़ुर्ब हासिल करता है यहां तक कि जब मैं उस से महब्बत करने लगता हूं तो उसका कान बन जाता हूं। जिस से वह सुनता है, उसकी आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है, उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है, उस का पांव बन जाता हूं जिससे वह चलता है अगर वह मुझ से सुवाल करता तो मैं उसे देता हूं और अगर वह पनाह चाहता है तो मैं उस को पनाह देता हूं। (बुख़ारी)

इस हदीस से यह मअ़लूम हुआ कि तक़वा इख़्तियार करने वाला बन्दा अपने फ़राइज़ की पाबन्दी करता है तो वह एक दर्जे में अल्लाह का वली हो जाता है, फ़राइ़ज़ से यहां फ़र्ज़ नमाजें ही न समझना चाहिए बल्कि वह सब कुछ जो अल्लाह ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है सब को बजा लाता है फिर नवाफ़िल के एहतिमाम से वलायत में उसके दरजात बढ़ते जाते हैं फिर वह दर्जा भी आ जाता है कि रब कहता है : मैं उस के कान, आंख, हाथ और पैर बन जाता हूं जिन से वह सुनता , देखता, पकड़ता, चलता है मतलब यह कि उस के अअ़ज़ा व जवारेह (शरीर के अंग) मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ नहीं करते यअ़नी वह मेरी हिफ़ाज़त में आ जाता है, फिर आगे है जब वह मुझ से मांगता है मैं उसे देता हूं और जब वह मुझ से पनाह मांगता है तो मैं उसे पनाह देता हूं और हदीस के शुरूअ़ ही में यह बात बता दी कि जो मेरे वली से अ़दावत रखता है और एक दूसरी रिवायत के मुताबिक तकलीफ़ पहुंचाता है उस से मैं लड़ाई का एअ़लान कर देता हूं ख़ुदा की पनाह। जिस से अल्लाह एअ़लाने जंग करे उस का कहां ठिकाना हम को चाहिए कि हम किसी अल्लाह के वली से यअ़नी अल्लाह से डरने वाले, हर काम में अल्लाह का लिहाज़ रखने वाले से न दुशमनी रखें न उसे किसी तरह की तकलीफ़ पहुंचाएं बल्कि उन से महब्बत रखें और उन की रहनुमाई में शरीअ़त की पाबन्दी करें।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

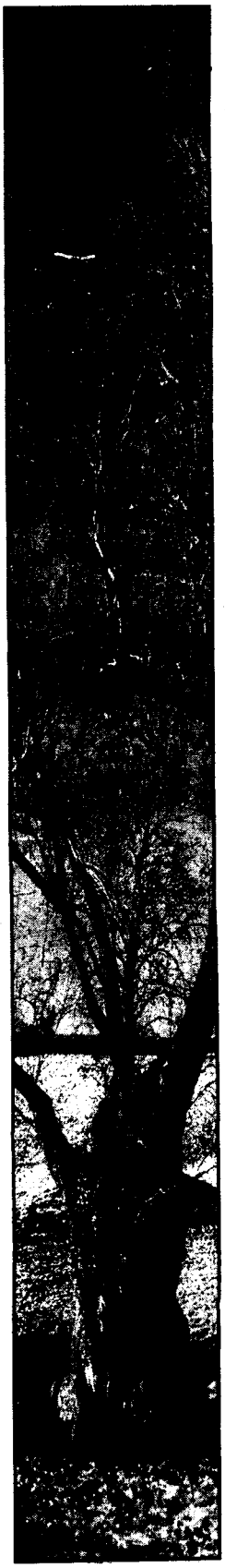

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

मुत्तकीयों के इनआमात

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम तकवा का रवैया इख्तियार करोगे तो अल्लाह तुम को अपने फज्ल से एक इमतियाजी ताकत और इमतियाजी शान बख्शेगा। और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा। और तुम को बख्श देगा। और अल्लाह बड़ा फज्ल करने वाला है। (अन्फाल : २७)

इस आयत में जो 'फुर्कान' का शब्द है (जिस का मतलब हम ने यहां इम्तियाजी ताकत और इम्तियाजी शान के शब्दों से अदा करना चाहा है) अस्ल में इस के मफहूम (अर्थ) में बड़ी वुसअत (विस्तार) है। तकवा इख्तियार करने वाले बन्दों के दिलों को अल्लाह तआला की तरफ से हक (सच्चाई) व बातिल (गुम्राही) की मारिफत (पहचान) की जो एक खास सलाहियत अता होती है। और उनकी जिन्दगी में जो एक नुमायां (प्रत्यक्ष) इमतियाज (विशिष्ठता) होता है जिस की वजह से उन की हैबत (आतंक–डर) व अजमत दिलों में पैदा होती है। और फिर अल्लाह तआला की खास मदद जो उन के साथ होती है जिस की वजह से वे अपने बलन्द मक्सदों में मोजिजाना (चमत्कारात्मक) कामयाबी हासिल करते हैं। "फुर्कान" के अर्थ में दरअस्ल यह सब कुछ दाखिल है। और इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने मुत्तकी बन्दों को ये सब ही कुछ इस दुन्या में देने का वादा फर्माया है। और इसी के साथ गुनाहों की माफी और बखशिश का भी, जिस का संबंध आलमे आखिरत से है।

और सूरए अअराफ में इर्शाद फरमाया गया :

तर्जमा : और अगर इन बस्तियों के रहने वाले ईमान लाते और तकवा का रवैया इख्तियार करते तो हम जमीन व आस्मान से उन पर बरकतों के दरवाजे खोल देते। (अअराफ : १७)

इस आयत में अल्लाह तआला की इस सुन्नत और इस कानून का एलान फर्माया गया है कि अगर किसी मुल्क और किसी इलाके के लोग ईमान और तकवा वाली जिन्दगी इख्तियार करें तो अल्लाह तआला की तरफ से उन पर बरकतों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं। फिर जिन नेमतों का संबंध आस्मान से है वह उन पर आस्मान से बरस्ती हैं। और जिन का संबंध जमीन से है वे जमीन से उनके लिए उबलती हैं।

और सूरए तलाक में तकवा वालों के साथ अल्लाह तआला के इसी खास फज्ल व करम को इन शब्दों में बयान फरमाया गया है –

तर्जमा : और जो लोग तकवा का रवैया इख्तियार करे, उन के वास्ते अल्लाह तआला मुश्किलों और सख्तियों में से नजात की राह पैदा कर देता है। और उन को उन तरीकों से रिजक देता है जिन का उन को गुमान भी नहीं होता। (अत्तलाक़: २)

और सूरए यूनुस में अहले–तकवा (तकवा वालों) को "अल्लाह के दोस्त करार देकर उन को दुन्या व आखिरत में कामयाबी की बशारत सुनाई गई है। इर्शाद है :–

तर्जमा : याद रखो कि जो अल्लाह के दोस्ते हैं उन्हें कोई खौफ व गम न होगा वे लोग वे हैं जो ईमान लाये औ और तकवा का रवैया उन्होंने इख्तियर किया। उन के लिये खास खुश खबरी है दुन्या की जिन्दगी में भी और आखिरत में भी। (यूनुस : ६२–६४)

इस आयत में अह्ले तकवा को "औलिया उल्लाह" (अल्लाह के दोस्त) कहा गया है, जो हकीकत में उन का बहुत बड़ा इकराम व एज़ाज़ (सम्मान) है। लेकिन इस से भी बड़ा सम्मान उनका यह है कि एक दूसरी जगह अल्लाह तआला ने खुद अपनी पाक–जात को उन का दोस्त बतलाया है।

सूरए जासियह में इर्शाद है –

तर्जमा : और अल्लाह दोस्त है तकवा वालों का। (जासियह : १६)

इसी तरह सूरः नह्ल की आखिरी आयत में अल्लाह तआला ने अपनी पाक जात को मुत्तकियों का रफीक और साथी बतलाया है। इर्शाद है :

तर्जमा : अल्लाह अपने उन बन्दों

के साथ (और उन का रफीक) है, जो मुत्तकी और नेकोकार है। (नहल : १२८)

बेशक किसी बन्दे के लिए इस से बड़ा कोई सम्मान नहीं हो सकता कि उस का मालिक और मौला उस के बारे में फर्माये कि हम उस के दोस्त, उस के रफीक और उसके साथ हैं। "क्या नसीब हैं अल्लाहु अकबर! लोटने की जाय है।

तकवा ही अस्ल नेकी और अमले-सालेह की रूह है

कुरआने-मजीद तकवा ही को नेकी की अस्ल व असास (बुन्याद) और सारे आमाल की रूह करार देता है। सूरः बकरह में इर्शाद है :-

तर्जमा : व लेकिन नेकी की हकीकत तो बस यह है कि कोई अल्लाह से डरे और तकवा इख्तियार करे। (बकरहः १८६)

और सूरए हज्ज में कुर्बानी का हुक्म देने के बाद इर्शाद फरमाया कि तुम्हारी कुर्बानियों का गोश्त (मांस) और खून अल्लाह को मतलूब नहीं है और न वह उस के पास पहुंचता है। बल्कि दिल का जो जज्बा और जो कैफियत कुर्बानी के हुक्म पर अमल कराती है, यानी तकवा बस वह मतलूब है, और वही खुदा के पास पहुंचता है और कबूल होता है और वही गोया अमल की रूह (जान) है :-

तर्जमा : तुम्हारी कुर्बानियों का गोश्त और खून अल्लाह को नहीं पहुंचता। उस के हुजूर जो कुछ पहुंचता है वह तुम्हारे दिलों का तकवा है। (अलहज्ज : ३६)

इस लिये एक और मौके पर फर्माया गया कि अल्लाह उसी अमल को कबूल करता है जिसके करने वाले में तकवा हो और उस ने वह अमल तकवा की सिफत के साथ किया हो। यानी अल्लाह की रिजा चाहना और आखिरत की फिक्र उस अमल का मुहर्रिक (प्रेरक) हो। इर्शाद है :

तर्जमा : अल्लाह तकवा वालों ही के अमल कबूल करता है। (माइदह : २७)

कुरआने मजीद में तकवा की तालीम व दावत, तरगीबी अंदाज (प्रेरणात्मक ढंग) में भी दी गयी है और तरहीबी अंदाज (भयात्मक ढंग) में भी। यानी बहुत सी जगहों पर तो मगफिरत व रहमत और जन्नत व रिजाये-इलाही की जैसी खुश खबरियां सुना कर तकवा पर उभारा गया है। और बहुत सी आयतों में इसी तरह कियामत और आखिरत के होलनाक मनाजिर (भयानक दृश्यों) का जिक्र करके इन्सान के दिल में तकवा और खुदा का खौफ पैदा करने की कोशिश की गयी है। पहले चंद तरहीबी आयतें पढ़िये :

सूरए हज्ज में इर्शाद है —

तर्जमा : ऐ आदम के बेटो! अपने परवरदिगार से डरो। यकीन करो कि कियामत का भूंचाल बड़ा ही सख्त हादिसा (घटना) होगा जिस दिन वह कियामत तुम्हारे सामने आ जायेगा, और तुम (उसके भयानक दृश्य देखोगे) तो हालत यह होगी कि किसी को किसी का होश न रहेगा। यहां तक कि नन्हें बच्चों को दूध पिलाने वाली मां अपने उस बच्चे को भूल जायेगा। और हम्ल (गर्भ) वालियों के हम्ल गिर जायेंगे। और तुम देखोगे सब लोगों को नशे की सी हालत में बेहोश। और वे किसी नशे से बेहोश न हुए होंगे मगर अल्लाह का अजाब बड़ा ही सख्त है। (इस हौलनाकी और डर से उन का यह हाल होगा) (अलहज्ज : १,२)

और सूरए लुकमान के आखिर में इर्शाद है :

तर्जमा : ऐ लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन से डरो जिस दिन कोई बाप अपने बेटे की तरफ से कोई मुतालबा अदा नहीं कर सकेगा, और न कोई बेटा अपने मां-बाप की तरफ से किसी मुतालबे की अदायेगी करेगा (बल्कि हर एक को अपनी ही फिक्र होगी)। यकीन करो कि अल्लाह का वादा बिल्कुल हक्क और अटल है। पस यह दुनयवी जिन्दगानी तुम को धोके में न डाले और इसी तरह धोके बाज शैतान अल्लाह की तरफ से तुम को किसी फरेब में मुब्तला न कर दे। (लुकमान : ३३)

इन दोनों आयतों में तो तकवा और खौफे-खुदा दिलों में पैदा करने के लिए कयामत और आखित की सख्तियों और हौलनाक मन्जरों (दृश्यों) का बयान किया गया है। (और बेशक यह ऐसा बयान है कि अगर किसी के दिल में इस को सुनकर भी खुदा का खौफ और आखिरत की फिक्र पैदा न हो तो बिलाशुबह वह दिल पत्थर का है)। और बहुत सी दूसरी आयतों में अल्लाह तआला की अजमत और उस के कहर व अजाब का जिक्र करके भी दिलों में तकवा पैदा करने की कोशिश की गयी है।

काम दोज़ख़ के करें
जन्नत के हैं उम्मीदवार
क़स्रे जन्नत तो बना है
अत्क़िया के वास्ते

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह का अपने दोस्तों के दुश्मनों से एलाने जंग

यह हदीस गुजर चुकी है कि अल्लाह तआला फरमाता है जिसने मेरे दोस्त के साथ दुश्मनी की उससे मेरी तरफ से लड़ाई का एलान है।

गरीब मुसलमानों की आजुर्दगी से अल्लाह की नाराजी

हजरत सअद (र०) बिनअबी वक्कास की यह हदीस भी गुजर चुकी है कि हुजूर (स०) ने फरमाया, ऐ अबू बक्र (र०) शायद तुमने उनको नाराज कर दिया है। अगर तुमने उनको नाराज कर दिया है तो तुमने अपने रब को नाराज किया।

अल्लाह जिसको अपनी अमान में ले उसको तकलीफ देना खुदा का मुजरिम बनना है

हजरत जुन्दुब (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने सुबह की नमाज पढ़ी वह अल्लाह के जिम्मे और उसकी अमान में हो जाता है। सो ऐसा न हो कि तुम किसी नमाजी को दुःख दो और अल्लाह तआला तुमसे अपने अमान वाले नमाजी के मुतअल्लिक बाज–पुर्स करे। अल्लाह तआला जिससे अपने जिम्मे के मुतअल्लिक बाज पुर्स करेगा तो उसको पा ही लेगा। फिर उसको औंधे मुंह दोजख में गिरा देगा। (मुस्लिम)

कलमः और नमाज व जकात से जानों और मालों का तहफ्फुज

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जंग करूं यहां तक कि वह ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह की गवाही दें और नमाज कायम करें, जकात दें और उन्होंने ऐसा किया तो अपनी जानों और मालों को मुझसे बचा लिया मगर इस्लाम के हक के साथ और उनका हिसाब अल्लाह पर है। (बुखारी–मुस्लिम)

हजरत तारिक बिन उशैम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है जिन्होंने ला इलाह इल्लल्लाहु कहा और उस चीज से इन्कार किया जिसको वह अल्लाह के सिवा पूजा करते थे तो उनका खून और उनका माल दूसरों पर हराम है। कोई उनको हाथ नहीं लगा सकता। और उनका हिसाब अल्लाह पर है। (मुस्लिम)

कलमः पढ़ने का एतिबार

हजरत मिकदाम बिन असवद से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया अगर मैं कुफ्फार के किसी आदमी से मिलूं और वह हमसे जंग करे और मेरा एक हाथ काट डाले फिर एक दरख्त की आड़ में मुझसे पनाह चाहे और कहे कि मैं अल्लाह के लिए इस्लाम लाया तो क्या मैं उसको कत्ल कर दूं। फरमाया नहीं, मैंने फरमाया या रसूलुल्लाह! उसने मेरा हाथ काट लिया। फिर यह बात कही। आप (स०) ने फरमाया, कत्ल मत करो। अगर तुम उसको कत्ल करोगो तो जो मर्तबा तुम्हारा पहले था उस मर्तबा को वह पहुंच जायेगा। और वह इस कलमः के कहने से पहले जैसा था वैसे तुम हो जाओगे। (मुस्लिम बुखारी)

कलमः के बाद कत्ल पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नाराजगी

हजरत उसामः (र०) बिन जैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमको हुर्कः की तरफ भेजा जो जुहैनः के कबीले से था। हमने लोगों के पानी पर सुबह की। मैं और एक अन्सारी उनके एक आदमी से मिले। जब हमने उसको अपनी तलवारों से ढांप लिया तो उसने लाइलाह इल्लल्लाहु कहा। बस अन्सारी रूक गये और मैंने अपने नेजे से उसको कत्ल किया जब हम वापस हुए और यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंची तो आपने फरमाया, ऐ उसामः क्या तुमने उसको ला इलाह इल्लल्लाहु कहने के बाद कत्ल किया? मैंने कहा या रसूलुल्लाह! वह तो पनाह चाहता था। आपने (सल्ल०) फरमाया, क्या तुमने उसको लाइलाह इल्लल्लाहु कहने के बाद कत्ल किया और आप इसको बराबर दुहराते रहे। यहां तक कि मैंने तमन्ना की कि ऐ काश मैं इस वाकिअः के बाद इस्लाम लाया होता।

और एक रिवायत में है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बार–बार इसको कहते रहे। क्या करोगे ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ। जब कियामत में लाइलाह इल्लल्लाहु आयेगा। (मुस्लिम – बुखारी)

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या तुमने लाइलाह कहने के बाद उसको कत्ल किया? मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! उसने तलवार के डर से कलमा पढ़ा था। आपने फरमाया, क्या तुमने उसके दिल को चीर कर नियत देखी थी? आप बराबर उसको दुहराते रहे। यहां तक कि मैंने तमन्ना की कि मैं इससे पहले इस्लाम न लाया होता।

हजरत जुन्दुब (र०) बिन अब्दुल्लाह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुसलमानों की एक फौज मुश्रिकीन से मुकाबला के लिए भेजी। मुश्रिकीन में एक आदमी था जो किसी मुसलमान के कत्ल का इरादा करता तो फौरन उसको कत्ल कर देता। एक मुसलमान उसकी गफलत की ताक में रहा। हम उसके मुतअल्लिक गुफतगू करते थे कि वह गालिबन उसामा (र०) बिन जैद हैं। जब उन्होंने उस पर तलवार उठाई तो उसने लाइ इलाह इल्लल्लाहु पढ़ा मगर उसको कत्ल कर दिया। खबर रसां रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में आया और हालात बतलाये और यह भी खबर दी कि उसामा (र०) ने इस तरह कत्ल किया। आपने उनको बुलाया और पूछा कि किस लिए तुमने कत्ल किया? उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! वह मुसलमानों को बहुत जियादः तकलीफ देता था। और फुलां फुलां को कत्ल किया था इस तरह एक जमाअत का नाम उन्होंने गिना दिया। मैंने उस पर तलवार उठाई तो उसने तलवार देख कर लाइलाह इल्लल्लाहु कहा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया, क्या तुमने उसको कत्ल किया? अर्ज किया जी हां। फरमाया जब लाइलाह इल्लल्लाहु कियामत के दिन आयेगा तो उसके साथ क्या करोगे। कहा या रसूलुल्लाह! मेरे लिए बख्शिश चाहिए। आपने फरमाया, ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ क्या करोगो जब ला इलाह इल्लल्लाहु कियामत के दिन आयेगा? आपने इसके सिवा कुछ भी नहीं फरमाया, यही फरमाते रहे कि ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ क्या करोगे जब कियामत के दिन लाइलाह इल्लल्लाहु आयेगा? (मुस्लिम)

जाहिरी हालत का फैसला

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन उतबः बिन मस्ऊद से रिवायत है कि मैंने हजरत उमर (र०) से सुना है कि रसूलुल्लाह (स०) के जमाने में लोगों के ऐब व सवाब का अन्दाजा वह्य के जरीये होता था। उसी के मुताबिक जजा व सजा का मुस्तौजिब होता था। लेकिन अब वह्य का सिलसिला मुन्कतअ हो गया अब हम तुम्हारे जाहिरी आमाल पर तुमको पकड़ेंगे। जिस शख्स से भलाई जाहिर होगी उससे हम मुत्मइन होंगे, और उसको अपने करीब करेगे। और उसके दिली भेदों को हम क्या जानें, अल्लाह उनके भेदों का हिसाब करेगा। और जिससे बुराई जाहिर होगी हम उससे मुत्मईन न होंगे। और न उसको सच्चा समझेंगे। अगरचि वह कहे कि हमारा बातिन अच्छा है। (बुखारी)

क़ब्र की ज़िन्दगी

जब आदमी मर जाता है और लोग उसे दफ़्न करके चले जाते हैं, तो उनके जाते ही दो फ़िरिश्ते आते हैं और तीन सुवाल करते हैं : तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? यह कौन आदमी हैं जो तुम्हारे बीच भेजे गये थे? जिस का ईमान पर ख़ातिमा हुआ है वह तीनों सुवालों के जवाबात यों देगा। मेरा रब अल्लाह है। मेरा दीन इस्लाम है और यह शख़्स तो अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)। लेनिक काफ़िर व मुनाफ़िक़ की ज़बान से निकलेगा हाए अफ़सोस मैं कुछ नहीं जानता।

जो लोग सहीह़ जवाब देंगे अल्लाह के हुकम से फ़िरिश्ते उनकी रूहों को अ़िल्लीयीन पहुंचा देंगे, उनकी तरफ़ जन्नत के दर खोल दिये जाऐंगे, वह उसकी हवाओं और ख़ुशबूओं से लुत्फ़ लेंगे और जो लोग अपने कुफ़्र व निफ़ाक़ से ठीक जवाब न दे सकेंगे अल्लाह तआ़ला के हुक्म से फ़िरिश्ते उनकी रूहों को सिज्जीन पहुंचा देंगे और उनकी तरफ़ दोज़ख़ के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और क़ियामत तक उससे झुलस्ते रहेंगे, सांप बिच्छू उनको डस्ते रहेंगे, फ़िरिश्ते उनको हथौड़ों से मारेंगे। (लेकिन अब मौत कहां) अ़िल्लीयीन वालों का इस क़ब्र से तअ़ल्लुक़ जुड़ा रहेगा, जो मुसलमान उनकी क़ब्र पर जाकर सलाम करेगा वह सुनेंगे।

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

कश्मीर के बादशाह

१३१५ ई० (७१५ हि०) में सनेह देव कशमीर का राजा था। राजा के मरने पर उसका लड़का रंजन राजा हुआ। उसने एक मुसलमान शाहमीर को, जो उस के पिता का पुराना सेवक था, वजीर बनाया। रंजन के मरने पर राजऊदन ने, जो उसका सम्बन्धी था, आकर तख्त पर कब्जा कर लिया। १३४६ई० (७४७ हि०) में वह भी चल बसा। वजीर ने उसके बेवा रानी से लड़कर शादी कर ली। इस अवध में शाह मीर बहुत ताकतवर हो चुका था और अपने कार्यों के कारण देश में सर्वप्रिय था और शमशुद्दीन की उपाधि (लकब) से कशमीर का बादशाह हो गया। बादशाह होकर उस ने आदेश दिया कि कृषि पर का पैदावार के छटे भाग से अधिक न लिया जाय। उसने चक और माकरी कौमों में से अधिकांश को बड़े बड़े फौजी पदों और राज्य के उच्च पदों पर नियुक्ति किया। अन्त में १३४६ ई० (७५० हि०) में उसका देहान्त हो गया।

इसके बाद पहले उस का बड़ा लड़का जमशेद बादशाह हुआ परन्तु कुछ ही दिनों के बाद उस के भाई सुल्तान अलाउद्दीन ने उसको निकाल का खुद मुल्क पर कब्जा कर लिया। उसने अलापुर एक नगर बसाया। उसके अच्छे कामों में से एक यह है कि उसने यह आदेश दिया कि बदचलन औरतों को उनके संबंधियों की जायदाद न मिले। १३६१ ई० (७६३ हि०) में सुल्तान का देहान्त हो गया और उसका लड़का शहाबुद्दीन बादशाह बना। यह बड़ा बहादुर और कूटनीतिज्ञ (बातदबीर) था। लक्ष्मी और शहाबपुर दो नगर उसने आबाद किये। हिन्दूकुष तक उस के राज्य की सीमा थी। १३८२ ई० (७८५ हि०) में उसका देहान्त हो गया।

इसके बाद उस का भाई कुतबुद्दीन बादशाह हुआ। उसने पांच वर्ष हुकूमत की। उसी जमाने में मीर सैयद अली हमदानी तशरीफ लाए। बादशाह और अमीरों ने शांदार स्वागत किया। एक शांदार खानकाह बनवाई गई लेकिन वह जल्द ही वापस चलेगए।

कुतबुद्दीन के मरने के बाद १३८८ई० (७६० हि०) में उसका लड़का सिकन्दर तख्त पर बैठा, उस ने शेख बट एक हिन्दू को जो मुसलमान हो गया था, मंत्री बनाया। इस नव मुस्लिम वजीर ने हिन्दुओं के साथ बड़ी सख्ती की। कुछ मन्दिरों को गिरवा दिया परन्तु बादशाह खुद बड़ा दानी और नेक था जिस कारण इराक और खुरासान के बड़े बड़े आलिम और अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ लोग उस के पास इकट्ठा हो गये थे। १४१६ ई० (८१६ हि०) में उसका स्वर्गवास हो गया।

उसके बाद उसका लड़का अलीशाह तख्त पर बैठा। तीन वर्ष तक तो पहले मंत्री के कारण हिन्दुओं को कष्ट पहुंचा लेकिन उसके मर जाने पर बादशाह ने अपने भाई शाही खां को मंत्री बनाया जिस के न्याय से प्रजा पसन्न और सम्पन्न हो गई। १४२२ ई० (८२६ हि०) में अलीशाह का देहान्त हो गया।

अब शाही खां जैनुल आबिदीन के नाम से बादशाह हुआ उसने सिकन्दर के सब खराब कानून निकाल दिये। वह खुद आलिम था इस लिए आलिमों की इज्जत करता था। संगीत का उस्ताद था, इस लिए संगीतकारों से उस का दरबार भरा रहता था। उसने कानून बनाया कि जिस जगह से माल चोरी जाय उसी जगह के हाकिम से वसूल किया जाय। उसने सिकन्दर के जमाने की जो जमीनें छीन ली गई थीं हिन्दुओं को वापस कर दीं और एलान कर दिया कि हर व्यक्ति को अपने अपने धर्म पर रहने का अधिकार है। उसके जमाने में प्रजा को हर प्रकार की धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। उसने अपने कानून तांबे की तख्तियों पर लिखवाकर बटवा दिये। उसके दरबार में हिन्दू वैद्य हाजिर रहते। उसने जजिया (जंगी टैक्स) लेना बन्द कर दिया। व्यापार को बहुत उन्नति दी, तमाम बन्दियों को रिहा कर दिया। स्वयं इतना पाक दिल था कि पराई औरतों पर नजरतक न डालता। उसने अनाज सस्ता करने के विचार से प्रतिदिन भाव लिखने का नियम बनाया। गज और जरीब को बड़ा बना दिया।

जिस से अप्रसन्न होता उस को इस खूबी से देश से बाहर करता कि खुद उस को भी मालूम न पड़ता। बारां के निकट एक नहर लाकर एक नगर पांच कोस का बसाया। अपने काल में उस ने बहुत से गांव और शहर आबाद किये। विभिन्न जगहों पर पुल और सड़कें बनवाईं। जरूरी स्थानों पर नहरें बनवाईं। इससे कश्मीर में शायद ही कोई जमीन ऐसी रह गई हो कि जहां खेती न होती हो। वीरनाग झील में एक आलीशान महल इस खूबी से बनवाया कि हिन्दुस्तान में उसकी कोई मिसाल न थी। वह जोगियों की बड़ी इज्जत करता। बन्दियों से काम लेने की परम्परा कशमीर में उसी ने जारी की। १४७२ ई (८७७ हि०) में उस का स्वर्गवास हो गया।

शाह हैदर बाप के बाद तख्त पर बैठा। वह शराब बहुत पीता था। नशे की हालत में उस का पांव फिसला और गिर कर १४७३ ई० (८७८ हि०) में मर गया उसके बाद उसका बेटा शाह हसन बादशा हुआ। वह चाहता था कि सुल्तान जैनुल आबदीन के कानून को जारी करे परन्तु उस का पूरा जीवन गृहयद्ध (खानाजंगी) में गुजरा आखिर में बीमार होकर मर गया। उसके बाद उस का सात वर्ष का लड़का मुहम्मद शाह बादशाह हुआ लेकिन उस जमाने में सैय्यदों का इतना जोर बढ़ गया था कि कशमीरी तंग आ गये। तंग आकर उन्होंने सैय्यदों को लड़कर बाहर निकाल दिया परन्तु कशमीरी खुद आपस में भी मिलकर न रह सके।

फ़तह खां ज़ैनुलआबदीन का पोता कई बार लड़ा आखिर में १४८८ ई० (८९४ हि०) में सफल होकर बादशाह बना। उसके समय में एक नये इस्लामी समुदाय के संस्थापक (बानी) मीर शहशुद्दीन नूर बख्शी तशरीफ लाये। बहुत से लोग उनके मुरीद (भक्त) हुए। चूंकि वह शीया थे अतः कुछ समय के बाद सरदारों में सख्त धार्मिक लड़ाई शुरू हो गई। फतह शाह का १५१६ ई० (६२२ हि०) में देहान्त हो गया अब विरोधी कबीले माकर और चक आपस में लड़ने लगे। उसमें से माकर कबीले का सरदार अबदाल अधिक बुद्धिमान था। वह खुद इन सरदारों से निपट न सका। इस लिए बाबर बादशाह के पास चला गया और जब वहां से सहायता लेकर आया तो नाजुक शाह को बादशाह बनाया। उसी जमाने में पंजाब से मिरजा काम़रान की फौज कशमीर की फतह के लए आई परन्तु असफल रही।

१५३५ ई० (६४२ हि०) के बाद पहले शमशुद्दीन फिर मिरजा हैदर तुर्क ने कशमीर पर कब्जा कर लिया। कुछ दिनों के बाद मिरजा हैदर मारा गया और मुगल कशमीर से निकाल दिये गये। उस समय इब्राहीम शाह फिर उस के बाद उसका भाई इसमाईल शाह तख्त पर बैठा। १५५६ हि० (६६४ हि०) में उसके मरने पर उसका लड़का हबीबशाह तख्त पर बैठा।

१५५७ ई० (६६५ हि०) में शाह अबुल मआली ने लाहौर से कशमीर पर हमला कर दिया परन्तु गाजी खां सेनापति ने एक ही हमले में उसको पराजित कर दियां १५५६ ई० (६६७ हि०) में मिरजा करा बहादुर (मुगल) ने भी कशमीर लेना चाहा लेकिन गाजी खां चक ने पांच सौ मुगल मार कर उन के होश ठिकाने लगा दिये। अब गाजी खां हबीबशाह को निकाल कर खुद बादशाह बन बैठा। उसने तिब्बत को अपने आधीन बनाया। उस का १५६६ ई० (६७४ हि०) में देहान्त हो गया और हुसैन शाह चक उस का भाई तख्त का मालिक हुआ। १५६८ ई० (६७६ हि०) में अकबर बादशहा की तरफ से मिरजा मुकीम दूत बन कर आये। हुसैन शाह ने उनकी बड़ी आवभगत की। इसके बाद यह बीमार होकर मर गया। १५६६ ई० (६७७ हि०) में उसका भाई अलीशाह तख्त पर बैठा। १५७२ ई० (६८० हि०) में मुल्ला इशकी और काजी सदरूद्दीन अकबर शाह की तरफ से दूत बनकर आये। अलीशाह ने आज्ञापलन का इजहार किया और देश में अकबर का खुतबा और सिक्का जारी किया। उस समय से कशमीर हिन्दुस्तान की मुगल सल्तनत का भाग बन गया। अलीशाह १५७८ ई० (६८६ हि०) में घोड़े से गिर कर मर गया। उसके बाद उसका लड़का यूसुफ शाह तख्त पर बैठा लेकिन १५७६ (६८७ हि०) में सरदारों की खानाजंगी से तंग आकर अकबर बादशाह के पास चला गया और उसने इमदादी फौज लेकर दोबारा तख्त हासिल कर लिया । १६८४ ई० (६६२ हि०) में अकबर शाह ने कुछ राजनैतिक कारणों से कशमीर को ले लिया और यूसुफ और उसके बेटे याकूब को बिहार में जागीर देकर अपने सरदारों में शामिल कर लिया।

कशमीर के बादशाहों के काम:

विभिन्न लोगों ने कशमीर में दो सौ वर्ष से अधिक हुकूमत की। इस अवध में कशमीर के बादशाहों ने बहुत से शहर बसाए। इनमें शान्दार महल बनवाए, सड़कें और पुल तैयार कराए, जगह जगह नहरें बनवाईं जिसका नतीजा

यह हुआ कि खेती को बहुत उन्नति मिली। मुख्यतः सुल्तान जैनुल आबदीन के जमाने में तो चप्पा भर भी जमीन बेकार न थी। इसीलिए उस के जमाने में अनाज बहुत सस्ता रहा।

अपने देश में इन बादशाहों ने बहुत से अच्छे काम किये। जैसे बन्दियों से काम लेना उन्हीं की ईजाद है। बदचलन औरतों को जायदाद में हिस्सा नहीं मिलता था। शराब का बेचना अपराध था तिब्बत, तुर्किस्तान, अफगानिस्ता, सिन्ध और हिन्दुस्तान से व्यापार होता था। जाफरान, मुश्क, गुलाब, सिरका, कागज, शाल और बिल्लौर के बरतन की खास तौर पर निकासी होती। बाहर से ऊंट, घोड़े, खच्चर आदि आते।

वह आलिमों की बड़ी इज्जत करते। चुनानचि सैय्यद, मुहम्मद फकीह और मीर सैय्यद अली हमदानी उसी जमाने के बुजुर्गों में से हैं। मुल्ला मुहम्मद शायर और मुल्ला जमील शायर का सम्बन्ध भी इन्हीं बादशाहों के साथ रहा। इन बादशाहों को संगीत का बड़ा शौक था। मुल्ला ऊदी जैसा अपनी कला का उस्ताद दरबार में हाजिर रहता। इतिहास और संगीत की बहुत सी पुस्तकें उस जमाने में लिखी गईं। सोम भट की पुस्तकों के अतिरिक्त राजतरंगी कशमीरी की मशहूर इतिहास की पुस्तक उसी जमाने की यादगार है। आतिश बाजी का उस्ताद हबीबनामी की बहुत इज्जत थी। कशमीर में पहले पहले तोप का प्रयोग और उसका ढालना उसी ने सिखाया। जोगियों की बड़ी इज्जत होती थी और कुछ बादशाहों को उन पर इतना भरोसा था कि खतरनाक बीमारियों में भी उन्हें का इलाज कराते थे। दूसरे देशों के दूत भी अकसर आते। चुनानचि हिन्दुस्तान के अतिरिक्त समरकन्द, खुरासान, मक्का, मिस्र गीलान के दूत आते रहते हैं। (जारी)

अनुवाद हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ४ का शेष)

यहां यह इश्काल नहीं होना चाहिए कि फिर हज़रते ज़करिया पर आरा क्यों चला? हज़रत यहया का क़त्ल क्यों हुआ? हज़रते सुमय्या को बर्छा मार कर क्यों शहीद किया गया हज़रत उमर व उस्मान व अली रज़ियल्लाह अन्हुम को शहीद क्यों किया गया? हज़रत हम्ज़ा कयों शहीद किये गये? बिअरे मऊना में ६६ सहाबा क्यों शहीद किये गये? बद्र व उहुद में सहाबा क्यों शहीद किये गये? हज़रते बिलाल को तपतपाती रेत पर क्यों घसीटा गया? हज़रते खब्बाब को दहकते कोयलों पर क्यों लिटाया गया? हज़रत खुबैब को क्यों शहीद किया गया? मैदाने करबला में नवास–ए–रसूल और उनके साथियों को क्यों शहीद किया गया? वग़ैरह! यह तो सब अअ्ला दर्जे के औलियाउल्लाह थे फिर इन को ख़ौफ़ और ग़म ने क्यों घेरा? यह इश्कालात हरगिज़ न होने चाहिएं इस लिए कि "ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् वला हुम यहज़नून" से वाकई (वास्तविक) ख़ौफ़ व रंज मुराद है फ़ित्री ख़ौफ़ व रंज तो होगा ही तभी तो सवाब मिलेगा, आख़िरत में उन को न ख़ौफ़ होगा न ग़म यहां के लिए एअलान है कि हम तुम को कुछ ख़ौफ़ से, भूख से, जान व माल के नुक़सान से ज़रूर ज़रूर आज़माएंगे फिर अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हुक्म दिया कि "उन साबिर लोगों को ख़ुशख़बरी सुना दो जो मुसीबत आने पर बोल पड़ते हैं कि हम तो अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौट जाने वाले हैं।"

और फ़रमाया "ऐसे ही लोगों पर ख़ुसूसी व उमूमी रहमतें उतरती हैं और यही लोग हिदायत पाए हुए हैं।" (अलबक़रा : १५५–१५७)

रही उन के मांगने की बात जब उन्होंने मांगा हम ने अता किया और जब उन्होंने पनाह मांगी हम ने पनाह दी इस सिलसिले में फ़ैसला हमारी आंखों से न होगा जन्नत में अगर उन से पूछा जाएगा तो साफ कहेंगे कि हम ने अपने रब की रज़ा मांगी थी वह मिल गई, हम ने दोज़ख से और रब की नाराज़गी से पनाह मांगी थी वह मिल गई रही दुन्या की ज़ाहिरी तकलीफ़ तो उसे दुन्यादार क्या जाने –

सर कटाने का मज़ा यहया से पूछ
लुत्फ़ तन चिरने का ज़करीया से पूछ
सर को रख देने को नीचे तैग़ के
लुत्फ़ इस का पूछ इस्माईल से
कूद पड़ने की तू जुर्अत आग में
पूछ ले हज़रत ख़लीलुल्लाह से
राहे हक़ में ज़ब्ह होने का मज़ा
पूछ हमज़ा व हुसैनो ज़ैद से
इन सब से राज़ी हो गया मौला मेरा
मैं भी लूंगा मेरे रब सौदा तेरा
जान दूं तो, दी हुई तेरी ही है
है रज़ा बस चाहता बन्दा तेरा

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : हज़रत बड़े पीर साहिब के फ़ातिहे का क्या तरीक़ा है? उन के फ़ातिहे का शरीअ़त में क्या हुक्म है? क्या उनके फ़ातिहे का खाना या मिठाई फ़ातिहा करने वाला बतौर तबर्रुक ख़ुद खा सकता है?

उत्तर : हज़रत बड़े पीर से मुराद सय्यिदना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं। वह जीलान (जिसे गीलान भी कहा जाता था) के रहने वाले थे। वह बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। लेकिन याद रहे कि वह सहाबी न थे। कुछ लोगों को लफ़्ज़ बड़े पीर से यह ग़लत फ़हमी हो जाती है कि वह इस उम्मत में सब से बड़े थे, ऐसा हरगिज़ नहीं है सहाब–ए–किराम की गिन्ती एक लाख से ज़ियादा है, वह हर सहाबी से दर्जे में कम थे, सहाबा के अ़लावा भी उनसे बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हां बेशक वह बड़े बुजुर्गों में से थे, उन की करामात दूसरे बुज़ुर्गों से कहीं ज़ियादा मशहूर हैं, लेकिन अक्सर सहाबा की तो एक भी करामत नहीं जानी जाती है फिर भी हर सहाबी किसी बड़े से बड़े बुज़ुर्ग (जो सहाबी न हो) से बड़ा है लिहाज़ा बड़े पीर साहिब के लफ़्ज़ से ग़लत फ़हमी न होना चाहिए। रही बात फ़ातिहे की तो फ़ातिहा किसी साहिबे ईमान को अपनी किसी नेकी के सवाब पहुंचाने के मअ़ने में इस्तिअ़माल होता है तो किसी को भी अपनी नेकी का सवाब पहुंचाने का यह तरीक़ा है कि पहले वह नेकी की जाए जैसे क़ुर्आने मजीद की तिलावत कुछ सूरतों की तिलावत, कल्म–ए–तय्यिबा और दूसरे कलिमात की तिलावत, तस्बीहे फ़ातिमा वग़ैरा पढ़ना, किसी मुस्तहिक़ को खाना खिलाना या खाना वग़ैरह दे देना किसी ज़रूरत मन्द को कपड़ा वग़ैरह दे देना, नक़्द पैसे देदेना, नल लगवा देना, कुंवा बनवादेना, मस्जिद बनवा देना, मदरसा बनवा देना दीनी तअ़लीम का नज़्म कर देना ग़रज़ कि कोई भी नेक काम करके अल्लाह तआ़ला से दरख़्वास्त की जाए कि ऐ अल्लाह इस का सवाब फ़ुलां को बख़्श दीजिए बस फ़ातिहा हो गया और उम्मीद रखना चाहिए कि जिस को सवाब बख़्शा गया। उसको सवाब पहुंच जाएगा, हज़रत बड़े पीर साहिब के फ़ातिहे का भी यही तरीक़ा है। रहा सामने खाना या मिठाई रख कर और अगरबत्ती या लोबान सुलगाकर दुआ़ करने की क़ैद लगाना यह तो दीन में नई बात निकालना है जो हदीस में मना है लेकिन बर्रे सग़ीर (उप महादीप) की उम्मते मुसलिमा में यह तरीक़ा रिवाज पा गया है, लिहाजा जहां इस का रिवाज है मुम्किन हो तो इस की इस्लाह की जाए फ़ित्ने का अन्देशा हो तो छोड़ दिया जाए मगर समझाने की कोशिश जारी रखी जाए और ख़ास तौर से इस पर तवुज्जह दी जाए कि फ़ातिहा दूसरों से पढ़वाने पर नकीर की जाए फ़ातिहा ख़ुद करें मर्द हों या औरत, ख़ुद क़ुर्आने मजीद की सूरत या सूरतें पढ़ें ख़ास तौर से सूर–ए–फ़ातिहा दुरूद शरीफ़ वग़ैरह फिर जैसे हर नमाज़ के बअ़द दुआ़ करते हैं ख़ुद सवाब पहुंचाने की दुआ़ करें और जिस तरह नमाज़ के वक़्त अगरबत्ती जलाने का मअ़मूल नहीं है, फ़ातिहे के वक़्त भी इसको ज़रूरी न समझें।

रही बात हज़रत बड़े पीर साहिब के फातिहे के हुक्म तो शरीअ़त तो उस दिन मुकम्मल हो गई जिस रोज़ "अल्यौम अक्मल्तु लकुम दीनकुम" की आयत उतरी जब हज़रत बड़े पीर साहिब इस दुन्या में तशरीफ़ भी नहीं लाए थे, फिर हज़रत बड़े पीर साहिब हंबली थे ख़ुद वह इस तरह के फ़ातिहे के क़ाइल ही न थे हमारे बर्रेसग़ीर में तो कोई हंबली मेरे इ़ल्म में है ही नहीं, जहां हंबली हैं उन को सय्यिदना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी से महब्बत है उन को अपना पेशवा मानते हैं, उन की किताब "ग़ुन्यत्तालिबीन" से फ़ाइदा उठाते हैं लेकिन हमारे यहां की तरह फ़ातिहा नहीं करते, हो सकता है मस्नून तरीक़े पर ईसाले सवाब करते हों।

अल्बत्ता हम अहनाफ़ माली इबादत का भी ईसाले सवाब करते हैं और बदनी का भी और दोनों को जमा कर के भी। ईसाले सवाब से मरने वाले की रूह को सवाब पहुंचता है और उसको फ़ाइदा पहुंचता है इस लिए इसाले सवाब करना चाहिए ताकि गुनहगारों की सज़ा में कमी हो और बुज़ुर्गों के दरजात बुलन्द हों वफ़ात

पाए हुए लोगों से रब्त व तअल्लुक़ का यह बेहतरीन तरीक़ा है, यह फ़ातिहा जाइज़ है सवाब का सबब है लेकिन ज़रूरी हरगिज़ नहीं नमाज़ छोड़ना, रमज़ान के रोज़े न रखना, माल की ज़कात न निकालना, हज्ज फ़र्ज़ होने पर हज्ज न करना बड़े गुनाह हैं, जहन्नम ले जाने वाले गुनाह हैं लेकिन फ़ातिहा न करने में कोई गुनाह नहीं अल्बत्ता करने में सवाब है। पस अहनाफ़ के नज़्दीक बड़े पीर साहिब के फ़ातिहे में बड़ा सवाब है। और न करने में कोई गुनाह नहीं है।

रही यह बात कि हज़रत बड़े पीर साहिब या किसी और बुज़ुर्ग के फ़ातिहे का खाना तबर्रुक हो जाता है, यह बड़ी अजीब बात है। हज़रत बड़े पीर साहिब अगर हयात होते और वह अपना झूठा खाना या पानी किसी को इनायत करते तो हम हनफ़ी लोग ज़रूर उस को तबर्रुक समझते लेकिन जिस खाने या मिठाई का सवाब बड़े पीर साहब को पहुंचाया तो उस का सवाब बड़े पीर साहब को उस वक़्त तक नही मिल सकता है न पहुंच सकता है जब तक वह खाना या मिठाई सवाब पहुंचाने वाले के अलावा कोई ग़रीब या मिस्कीन न पाए। अलबत्ता अगर कोई एक देग खाना पकवाए और अल्लाह तआला से दिल में या ज़बान से हाथ उठाए, या बे हाथ उठाए, खाने के पास, या नमाज़ के बाद दुआं करे कि ऐ अल्लाह इस देग का खाना या जो खाना दाल चावल रोटी, गोश्त, मीठा वग़ैरह पकवाया है इस को अपने मुसलमान भाइयों को खिलाऊंगा उन में ग़रीब भी होंगे और अमीर भी इसी में से हमारे घर के लोग भी खाएंगे इस पर जो भी सवाब मिले उसको हज़रत बड़े पीर साहिब को पहुंचा दीजिये या कुछ भी न कहे सिर्फ़ दिल में नीयत कर ले कि जो खाना पकवाया है या पकवा कर अपने घर वालों और अज़ीज़ व अक़ारिब को खिलाने का इरादा है उस पर जो सवाब मिले वह हज़रत बड़े पीर साहिब के लिये है ऐसी सूरत में उस खाने को घर वाले खाएं या अमीर व ग़रीब रिश्तेदार खाएं तो कोई हरज नहीं लेकिन इस नीयत के बिग़ैर खाने या मिठाई पर यह कह दिया कि इस मिठाई या खाने के ख़ैरात करने का सवाब बड़े पीर साहिब को पहुंचे तो अगर्चे सवाब मिलने से पहले किसी को सवाब बख़्शने का हक़ नहीं लेकिन खाना या मिठाई अभी आपके हाथ में है उसे मुस्तहिक़ को देकर सवाब हासिल कर लीजिए ताकि जिस को सवाब बख़्शा है उसे पहुंच जाए। अगर आप ने ख़ुद ही खा लिया तो इसमें दो ख़राबिया हैं, एक तो अल्लाह तआला से झूट बोले दूसरे जब सवाब मिला ही नहीं तो सवाब पहुंचा भी नहीं।

रही यह बात कि जिस खाने या मिठाई पर किसी बुज़ुर्ग का फ़ातिहा पढ़े वह तबर्रुक हो जाता है यह बात हज़रत बड़े पीर साहिब जिस शरीअत पर चलते थे यअ़नी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअत, उस में नहीं है न क़ुर्आन में न हदीस में न सहाबा (रज़ि०) के अमल में न इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के इज्तिहाद में पस उस से बचना चाहिए रही बात बरकत वाले खाने की तो हर हलाल रोज़ी जिस पर आप बिस्मिल्लाहि व अला बरकातिल्लाह पढ़ कर खाएंगे बरकत हासिल होगी, इन्शाअल्लाह तआला। अल्लाह तआला हम सब को अपने औलिया से महब्बत रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उसी अमल की तौफ़ीक़ दे जिस से वह राज़ी हो।

क़ियामत

अल्लाह के हुक्म से इस्राफील (अ०) सूर फूकेंगे, उसकी तेज़ आवाज़ से सारे जान्दार मर जाएंगे, ज़मीन आसमान सब टूट फूट जाएंगे, पहाड़ धुनी हुई रूई की तरह हवा में उड़ेंगे। फिर अल्लाह के हुक्म से इस्राफील (अ०) दोबारा सूर फूकेंगे फिर दुन्या के सारे इन्सान और जानदार जिन्दा हो जाएंगे और सब लोग अपनी अपनी क़ब्रों से उठ कर मैदाने हश्र में जमा होंगे, सूरज बिल्कुल क़रीब आजाएगा, धूप और गर्मी से व्याकुल होकर लोग बचाओ बचाओ चिल्लाएंगे। अनेक लोगों को अल्लाह तआला अपने अर्श के साये में जगह देंगे, हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हौज़े कौसर से जाम पिलाएंगे। हिसाब व किताब होगा मीज़ान में अअ़माल तौले जाएंगे, फिर सब को पुले सिरात से गुज़रना होगा, नेक लोग उस से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल होंगे, बुरे लोग पुले सिरात पर से जहन्नम में जा गिरेगे, बअ़ज़ ईमान वाले गुनहगार भी दोज़ख में जा गिरेंगे, लेकिन अल्लाह तआला की इजाज़त से अंबिया अलैहिमुस्सलाम, औलियाउल्लाह और मअ़सूम बच्चों और हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त से बेशुमार ईमान वाले बख़्शे जाएंगे।

हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी उर्फ बड़े पीर साहब

मु० इरफान फारूकी नदवी

हजरत अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैहि ४७० हि० में पैदा हुए। बचपन के हालात तारीख व सीरत की किताबों में नहीं मिलते। आपके पिता का नाम अबू सालेह था। आपका नसब दस पीढ़ियों के बाद हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु तक पहुंचता है। १८ वर्ष की उम्र में बगदाद आए और इल्म व ज्ञान के सीखने में लग गए। आपने उस समय के बड़े–बड़े उस्तादों से पढ़ा है आपके उस्तादों में इब्ने उकैल, बाकिल्लानी, अबुलवफा और अबूजकरिया तबरेजी जैसे बड़े लोगों का नाम है। तज़्किया, तसव्वुफ व तरीकत की तअलीम शैख अबुलखैर हम्माद बिन मुस्लिम अद्दब्बास से प्राप्त की लेकिन आपकी यह शिक्षा काज़ी अबूसईद मख्रमी के हाथों पूरी हुई।

उलूम नुबूवत को सीख लेने के बाद आप लोगों के सुधार की तरफ मुतवज्जेह हुए। आपने एक तरफ शेख मख्रमी के मदरसे में पढ़ाना शुरू किया तो इतनी ज्यादा भीड़ होने लगी कि मदरसे की चहारदीवारी तंग हो गई और उसको बढ़ाना पड़ा। और दूसरी तरफ आपने अपने वअज व नसीहत का भी सिलसिला शुरू किया, आपकी इन तकरीरों पर पूरा बगदाद टूटा पड़ा रहा था। इतनी ज्यादा संख्या में लोग आते थे कि तिल रखने की जगह न रहती। अल्लाह तआला ने आपको ऐसा रोअब (धाक) और कबूलियत दी थी कि जो बड़े–बड़े बादशाहों को भी नसीब नहीं। अल्लामा इब्ने कुदामा हम्बली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने किसी भी आदमी की दीन की वजह से आपसे बढ़कर इज्जत होते हुए नहीं देखा, बादशाह और वजीर आपकी मजलिस व सभा में हाजिर होते और अदब से बैठते, उलमा व फुक्हा की कुछ गिनती नहीं, एक एक मजलिस में चार–चार सौ लोग आपके मल्फूजात व तकरीर लिखते थे।

लेकिन इसके साथ आप बहुत ही सादगी पसन्द और मुतावाजेअ थे, घमण्ड व गुरूर उनको छूकर भी नहीं गुजरा था। एक बच्चा और एक लड़की भी बात करने लगती तो आप उसको खड़े होकर सुनते और उसका काम करते, गरीबों व फकीरों के पास बैठते और उनके कपड़ों से जुए निकाल देते लेनिक अगर कोई सरदार व वजीर आता तो आप उसके सम्मान में खड़े न होते। अगर खलीफा आपके यहां आता तो आप अन्दर चले जाते जब वह इत्मिनान से बैठ जाता तो आप निकलते, आप ऐसा इसलिए करते थे ताकि आपको उनके इज्जत व सम्मान में खड़ा न होना पड़े। आप भूखों को खाना खिलाते और गरीबों पर पानी की तरह पैसा बहाते। अल्लामा इब्ने नज्जार ने आपका यह कौल (कथन) नकल किया है आप फरमाते हैं कि अगर पूरी दुनिया मेरी मुट्ठी में हो तो मैं भूखों को खाना खिला दूं। यह भी फरमाते थे कि ऐसा मालूम होता है कि मेरी हथेली में सूराख है कोई चीज उसमें रूकती नहीं अगर हजार दीनार मेरे पास आएं तो रात न गुजरने पाए।

कलाइदुलाजवाहिर के लेखक ने लिखा है कि आप छात्रों की गल्तियों को बर्दाश्त करते, आपके साथ रहने वाला हर आदमी यही समझता कि आपका सबसे प्यारा व चहीता वही है, आपके यहां हाजिर रहने वालों में से अगर कोई आपके यहां मौजूद न होता तो उसके बारे में पूछते और पता लगाते, रिश्तेदारी व सम्बन्धों का बड़ा खयाल रखते, गलतियों और कोताहियों को माफ कर कोई किसी बात पर कसम खा लेता तो आप उसकी बात मान लेते और जो कुछ लोगों के (ऐब के) बारे में जानते थे उसको छिपाते थे।

अल्लाह तआला कभी कभी अपने बन्दों के हाथ से ऐसे काम करा देता है जो आम हालात में पेश नहीं थे अगर यह घटनाएं नबी के हाथ से होती हैं तो उन्हें मुअजिजा कहते हैं जैसे हजरत मूसा के लाठी का सांप बन जाता आदि। लेकिन अगर इस तरह की घटनाएं ऐसे नेक मुसलमान व वली से हों जो कि नबी न हो तो उन्हें करामात का हैं। आप बहुत सी करामते हैं। शेखुल इस्लाम इजुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम, और अल्लामा इब्ने तैमिया ने लिखा है कि शेख की करामत तवातुर की हद तक पहुंच गई हैं यानी उनको हजारों लोग जानते हैं। लेकिन यहां अल्लामा इब्ने कसीर जो बहुत बड़े मुहद्दिस और मशहूर इतिहास कार हैं उनकी टिप्पणी को भी जिक्र करना मुनसिब मालूम होता है आप लिखते हैं

"आपकी बहुत से कश्फ व करामात हैं लेकिन आपके मानने वाले और आपसे मुहब्बत करने वाले आपकी ऐसी ऐसी करामात और ऐसे अकबाल (कथन) नकल करते हैं जिनमें से ज्यादातर झूठे हैं और बढ़ाचढ़ा कर आपसे जोड़ दिए गए हैं।

आपसे बहुत लोगों को फाइदा पहुंचा है शअरानी की तब्कातुलकुब्रा में आपका यह कौल मिलता है आप फरमाते हैं कि मेरे हाथ पर पांच हजार यहूदी व ईसाई मुसलमान हो चुके, एक लाख से ज्यादा गुनाहगार लोग मेरे हाथ पर तौबा कर चुके हैं और यह अल्लाह तआला की बड़ी नेअमत है।

हजरत शेख के मवाओज (उपदेश) दिलों पर बिजली का असर करते हैं। आपकी किताबों के नाम फुतूहुर्रब्बानी और फुतूहुलगैब और गुन्यतुत्तालिबीन आदि हैं। हजरत मौलाना अबुल हसन हसनी उर्फ अली मियां लिखते हैं आपके मजालिस के वअज (उपदेश) के शब्द आज भी दिलों को गर्माते हैं एक लम्बी समय बीत जाने के बाद भी उनमें जिन्दगी और ताजगी महसूस होती है। यहां फिर हम मशहूर मुहद्दिस अल्लामा इब्ने कसीर की बात नकल करतना चाहेंगे ताकि सिक्के के दोनों पहलू सामने आ जाएं लिखते हैं आपने गुन्यत्तालिबीन और फुतूहुलगैब आदि किताबें लिखी हैं उनमें बहुत ही अच्छी अच्छी बातें हैं लेकिन उसमें आपने जईफ (कमजोर) और मौजूदा (मनगढ़ंत) हदीसें भी जिक्र कर दी हैं।

हम आपके वअज का कुछ भाग नकल करते हैं "दुनिया में से अपना भाग इस तरह मत खाओ कि वह बैठी हुई हो बल्कि उसके बादशाह के दरवाजे पर इस तरह खाओ कि तमु बैठे हो और वह अपने सरपर थाल रखे हुए हो, दुन्या उसकी सेवा करती है जो अल्लाह तआलाके दरवाजे पर खड़ा होता है और जो दुनिया के दरवाजे पर खड़ा होता है उसको बेइज्जत व जलील करती है। एक दूसरे वअ़ज़ में फरमाते हैं "दुन्या हाथ में रखनी जाइज जेब में रखनी जाइज, अच्छी नियत से उसका इकट्ठा करना जाइज, हां जहां तक दिल में जगह देने की बात है तो यह नाजायज है। दरवाजे पर उसका खड़ा होना जाइज बाकी उसका दरवाजे से आगे घुसना जाइज नहीं और न ही तेरे लिए इसमें इज्जत है। एक लम्बे पीरियड तक आप लोगों को फाइदा पहुंचाते रहे। ५६१ ई० में ६० वर्ष की उम्र में आपकी वफात हुई। आपको आपके मदरसे में ही दफ्न किया गया।

बीमारी पुर्सी

बीमारी और बीमार की इयादत (बीमारपुर्सी) के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण क्या है?

जवाब : अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि ईमान वाले का मामला भी अजीब है अगर उसे कोई खुशहाली मिलती है तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करता है जो उसके लिए अच्छा है और जब कभी उस पर मुसीबत आती है तो वह सब्र करता है और यह भी उसके लिए अच्छा है।

हजरत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया किसी मुसलमान को जो भी दुख, बीमारी, चिंता या कोई पीड़ा होती है, यहां तक कि अगर उसे कोई कांटा भी चुभता है तो अल्लाह तआला इसके द्वारा उसके गुनाह कम कर देता है।

मरीज पर अल्लाह का एक एहसान यह भी है कि अल्लाह उसकी दुआ कुबूल करता है। हजरत उमर (रजि०) से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फरमाया, जब तुम किसी मरीज की इयादत के लिए जाओ तो उससे कहो कि वह तुम्हारे लिये दुआ करे। इसलिए कि (कबूलियत में) उसकी दुआ फरिश्तों जैसी है।

मरीज के लिए यह जायज है कि वह लोगों से अपनी बीमारी और तकलीफ का इजहार करे, लेकिन इससे बेसब्री और अल्लाह तआला से नाराजगी का इजहार न होता हो। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि०) से रिवायत है कि मैं नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ, तो आप (सल्ल०) को बहुत तेज बुखार था। मैंने आपके जिस्म मुबारक पर हाथ रखा और कहा आपको तो तेज बुखार हो रहा है आपने फरमाया हां, मुझे उतना बुखार हो रहा है, जितना तुममें से दो आदमियों को होता है।

एक हदीस के मुताबिक मुसलमान पर मुसलमान का यह हक है कि एक बीमार हो तो दूसरा उसकी इयादत करे। एक और हदीस जो हजरत अबू मूसा (रजि०) से रिवायत है अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया, भूखे को खाना खिलाओ, मरीज की इयादत करो और कैदी को आजाद कराओ।

इयादत के फायदे बयान करते हुए नबी (सल्ल०) ने फरमाया, मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की इयादत के लिए जाता है तो उस समय तक जन्नत में रहता है, जब तक वापस नहीं आ जाए। हजरत अली (रजि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि जब मुसलमान भाई की इयादत के लिए जाता है तो शाम तक सत्तर हजार फरिश्ते उसके लिये रहमत की दुआ करते हैं और अगर वह शाम के वक्त इयादत के लिए जाता है तो सुबह तक सत्तर हजार फरिश्ते उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं।

जब मुसलमान अपने मुसलमान भाई की इयादत के लिए जाए तो उसे चाहिए कि उसके लिए सेहत व आफियत की दुआ करे उसे सब्र की तलकीन करे और उससे ऐसी बातें करे जिससे उसका दिल बहले और वह महसूस करे कि उसकी तकलीफ में कमी हुई है। नबी सल्ल० का इरशाद है कि जब तुम किसी मरीज के पास जाओ तो उसे लंबी उम्र की उम्मीद दिलाओ, इससे अल्लाह तआला की कजा तो नहीं टल सकती, लेकिन मरीज की ढारस बंधती है।

(दूसरी किस्त)

अध्यापक बन्धुओं के लिये

हम कैसे पढ़ायें ?

विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

शिक्षा का उद्देश्य : "शिक्षा का उद्देश्य जीवन है", अर्थात शिक्षा का काम जीवन को कामयाब और कारआमद बनाना है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उपयोगी इन्सान बन सके। उसमें जो भी जन्मजात क्षमतायें मौजूद हें उन्हें शिक्षा इस प्रकार उजागर करे कि वह स्वयं सफल जीवन व्यतीत कर सके और दूसरों के काम भी आ सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें बच्चे के व्यक्तित्व को इस तरह संवारना चाहिए कि उस में वह जरूरी खूबियां पैदा हो जायें जिन पर कामयाबी का दारोमदार है।

शिक्षा के स्रोत : विद्यालय में प्रवेश लेने से पहले बच्चे के विकास पर घर और आसपास के माहौल का गहरा असर पड़ता है। जो कुछ वह सीखता है लोगों के मेल जोल से सीखता है, जब वह स्कूल में आता है तो स्कूल के सदस्य अर्थात अध्यापक और बच्चे उसके व्यक्तित्व के बनाने में उसी प्रकार हिस्सा लेते हैं जिस प्रकार घर और पड़ोस के लोग। लेकिन स्कूल का काम यहीं पर समाप्त नहीं होता उसे कुछ विशेष व्यस्तायें उपलब्ध करने हैं जो विस्तृत अर्थों में उस के लाभदायक और कारआमद हों। यह है स्कूल का खास काम।

शिक्षा की विषय वस्तु के चयन का हक : बच्चे विशेष कर तन्दुरूस्त बच्चे बहुत ही चुस्त और फर्तीले होते हैं। अतः यह प्रश्न उठता है कि उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार व्यस्ततायें चुनने की आजादी क्यों न दी जाये? उनके रूझान को रोक कर चयन के हक को क्यों मारा जाये? मनोविज्ञान के जानकारों का कहना है कि किसी चीज को बच्चों की इच्छा के विरूद्ध उन के गले बान्धना बढ़ती हुई पौध को पामाल करना है क्योंकि इस से मानसिक तनाव पैदा होता है। और सक्रियता, अनेकता और उपज जैसे अच्छे गुण जो व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति (इजहार) और उभार के लिये बेहद जरूरी है, मुर्दा हो जाते हैं। लेकिन बच्चे को उस के हाल पर छोड़ देने में बाज बड़े खतरे भी हैं। प्रथम यह कि बच्चे में चयन की क्षमता नहीं होती। यह प्यास की हालत में जहरीले और साफ पानी में तमीज नहीं कर सकता। वह हर उस चीज की नकल करेगा जो उस की आंख और कान को भली लगती है। दूसरे बच्चा मालूमात हासिल करने के तरीका से अनभिज्ञ होता है। उसमें सीखने की इच्छा और इरादा दोनों असाधारण रूप से मौजूद होते हैं। लेकिन वह अन्धेरे में टटोलता फिरता है। अतः हमारी ड्यूटी है कि हम उसके लिये वह विषय वस्तु चुनें जो उस की निगाह में दिलचस्प और उसके हक में लाभदायक हों। और ऐसे मेथड पैदा करें जिनके द्वारा वह इस आवश्यक विषय वस्तु की आसानी से हासिल कर सके।

विषय वस्तु और बच्चा :

शिक्षण के विषय वस्तु का चयन तो हमें जरूर करना चाहिए लेकिन यह बात हमेशा ध्यान में रखना जरूरी है कि वास्तव में विषय वस्तु निर्धारित लक्ष्य नहीं है बल्कि असल मकसद बच्चे के व्यक्तित्व का विकास है। इस लिये हमें बच्चों को अपने बनाये हुए सांचे में ढालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। शिक्षण की विषय वस्तु के अन्दर बच्चों की व्यक्तिगत सक्रियता के लिये काफी गुंजाइश रखनी जरूरी है। ताकि हमारे बच्चे स्कूल छोड़ने पर यह महसूस कर सकें कि हम ने उनकी क्षमताओं को अपने नियमों के शिकंजे में कस कर दबा नही दिया है। हमें पढ़ाते समय ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षण की विषय वस्तु बच्चे के लिये है न कि बच्चा शिक्षण की विषय वस्तु के लिए।

चयन की पेचीदगी :

विषयों के चयन की समस्या बहुत पेचीदा है। इस बारे में सब का एक राय होना असम्भव है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक और धार्मिक अकीदों की तरह शिक्षा के बारे में अपनी ज़ाती राय रखता है जो इस बात पर निर्भर है कि वह कुछ मानव जीवन के प्रति क्या नजरियः रखता है। तार्किक प्रमाण तथा तर्क का कोई जतन एक आस्तिक (मजहबी व्यक्ति) और नास्तिक को पाठ्यक्रम के विवरण के मामले में एक मत नहीं कर सकता, फिर भी हमें उन स्रोतों की जांच पड़ताल करनी चाहिए जो हमें इस काम में मदद दे सकते हैं।

मूल्यों की कसौटी :

हमें एक ऐसी कसौटी बनानी

है जिसके जरिये हम परख सकें कि आया विशेष विषय पाठ्यक्रम में दाखिल किये जाने के काबिल है या नहीं। इस सिलसिले में मूल्यों के उन खास खास कसौटियों का उल्लेख करना आवश्यक है जो भूतकाल (माजी) में पाठ्यक्रम के जिम्मेदार रही हैं। और किसी हद तक अब भी हैं। १. मांसिक प्रशिक्षण २. उपयोगिता ३. मालूमात

१. मांसिक प्रशिक्षण :

मेन्टल ट्रेनिंग के हामी(पक्षधर) बड़े जोर से इस बात को पेश करते हें कि वह विषय पाठ्यक्रम में दाखिल करना चाहिए जिस से मेन्टल ट्रेनिंग होती है, चाहे उसका इस्तेमाल हमारे दैनिक जीवन में हो या न हो। शक्ति को विशेष प्रकार की विषय वस्तु से विकसित किया जा सकता है इस नजरियः के मातहत बहुत से विषय पाठ्यक्रम में दाखिल किये गये हैं जैसे साहित्य का ज्ञान कल्पना शक्ति को पैदा करने के लिये गणित तर्क शक्ति के विकास के लिए, विज्ञान निरीक्षण शक्ति के विकास के लिए इत्यादि।

इस कसौटी की जांच : लेकिन यह नजरिया किसी ठोस बुनियाद पर कायम नहीं है, पहले तो यह कि आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार मन की यह कल्पना ही गलत है कि वह अनेक विभागों में बंटा है अर्थात कल्पना, तर्क, निरीक्षण आदि की शक्तियां जेहन के अलग अलग हिस्सों से तअल्लुक रखती हैं। दरअसल हकीकी तालीम के किसी काम में चाहे कोई विषय हो पूरा जेहन (माइन्ड) काम करता है न कि उस का कोई खास हिस्सा। इस के अलावा मानसिक प्रशिक्षण इतना विषयों पर निर्भर नही है जितना कि उस तरीके पर जिस से वह विषय पढ़ाये जायें। साहित्य पढ़ाने के बावजूद कल्पना शक्ति का विकास नहीं हो सकता अगर वह सही तरीके से नहीं पढ़ाया गया है इसी प्रकार गणित पढ़ाने के बावजूद बच्चों मे तर्क के साथ सोचने के की आदत नहीं डाली जा सकती अगर उस के तरीक–ए–तालीम में इस बात का ख्याल नहीं रखा गया है। यही बात दूसरे विषयों के पढ़ाने पर भी सही उतरती है। अगर इन अनेक मानसिक विभागों को मान भी लिया जाये तब भी यह तरीकः मुनासिब नहीं मालूम होता, क्योंकि मानसिक शक्तियों को अगर अलग अलग विकसित करने की कोशिश की जायेगी तो हम असल मकसद से दूर जा पड़ेंगे। अर्थात फिर शिक्षण विषय खुद अपनी जगह मकसद बन जायेगा, और इस बात को अनदेखी हो जायेगी कि वह जीवन को सफल बनाने का मात्र एक साधन है। इस का नतीजा ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि कुछ एक सीमित आदतें पैदा हो जायेंगी। उदाहरण के लिये अगर असाधारण शब्दों की सूची रटा कर बच्चों की स्मरण शक्ति को विकसित करने की कोशिश की जाये तो नतीजा ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि बच्चों को यह शब्द याद हो जायेंगे और उन्हें रटने की आदत पड जायेगी। लेकिन इस से उन्हें कोई फायदा नहीं होगा। क्योंकि न तो शायद इन शब्दों के प्रयोग की कभी नौबत आयेगी और न हीं रटने की आदत जिन्दगी के लिये मुफीद साबित होगी।

दूसरे, मानसिक शक्तियों के प्रशिक्षण को त्वरित लक्ष्य मान लेना शिक्षण के सही काम को भुला देना है। इस से मानसिक जीवन का सन्तुलन बिगड़ने का अन्देशः है। मात्र अभ्यास के लिए माइंड पर हर तरह का बोझ डालना ठीक नहीं है। अतएव गणित इस लिये नहीं पढ़ाना चाहिए कि इससे तर्क शक्ति पैदा होती है। बल्कि इस लिये कि दैनिक जीवन की अटल जरूरत है। इस बिना पर वह अव्यवहारिक चीजें जो हम गणित के सिलसिले में मात्र तर्क शक्ति की खातिर पढ़ाते हैं और जिन का जीवन से और मालमात से कोई तअल्लुक नहीं होता बच्चे के सर जबरदस्ती मेढ़नी नहीं चाहिए। यही स्थिति अन्य विषयों की भी है।

तीसरे यह सिद्धान्त मानसिक जीवन में अनेक शक्तियों की बढ़ोत्तरी का सन्तुलन नही करता अर्थात इस से यह नहीं मालूम होता कि इन्सान के मानसिक जीवन में किसी विशेष शक्ति का क्या दर्जा है। कौन सी शक्ति अधिक महत्वपूर्ण है और कौन सी कम। इस का नतीजा यह होता है कि कभी एक शक्ति पर तमाम ध्यान केन्द्रित होता है और कभी दूसरी पर। एक सदी पहले "स्मरण शक्ति" पर बल दिया जाता था। इसलिए पाठ्यक्रम में उन विषयों को अधिक महत्व प्राप्त था जिन के जरियः समझा जाता था कि हाफिजः तरक्की करता है। अतएव प्राचीन भाषाओं की कवायद से सम्बन्धित लम्बी लम्बी गरदानें (व्याकरण के नियम) रटाई जाती थीं। कुछ समय बाद जब "अकलियत" (तर्क संगत) का युग आया तो पाठ्यक्रम का केन्द्र वह विषय बन गये जिन से तर्क शक्ति का विकास होता है। अतः ज्योमेट्री और लाजिक (तर्कशास्त्र) के शिक्षण

पर बहुत जोर दिया जाने लगा। यहां तक कि जो इन विषयों से नावाकिफ होता उसे अनपढ़ समझा जाता, चाहे वह किसी दूसरी विद्या का कितना ही बड़ा पंडित क्यों न हो। ब कुछ दिनों के निरीक्षण को बहुत महत्व दिया जाने लगा है और इस गर्ज से प्रकृति के अध्ययन का विषय तमाम प्राथमिक विद्यालयों में अनिवार्य हो गया है।

मानसिक प्रशिक्षण के ट्रांस्फर की प्रक्रिया :

वास्तव में इस नजरियः के हामियों का विचार है कि एक प्रकार की मेन्टल ट्रेनिंग जो किसी विषय के द्वारा होती है न सिर्फ अन्य विषयों में, बल्कि जीवन की आम समस्याओं में भी सहायक होती है, आम इस से कि इसकी नवय्यद कुछ भी हो। इसे शिक्षण की शब्दावली में मानसिक प्रशिक्षण के ट्रांसफर की प्रक्रिया कहते हैं। इस बारे में कई प्रश्न उठते हैं। यह अमल किस हद तक मुमकिन है? क्या इस की मात्रा तमाम विषयों में बराबर होती है? क्या शेर याद करने का अभ्यास दूसरी चीजों के याद करने में भी सहायक होता है? अथवा गणित के तर्क से आम जिन्दगी की समस्याओं में ठीक तौर पर सोच विचार करने और सही नतीजे निकालने में आसानी होती है। प्रयोग करने वाले सामान्यतः इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मेन्टल ट्रेनिंग के ट्रांस्फर का नतीजा ज्यादा भी हो सकता है, कम भी हो सकता है और यह भी मुमकिन है कि बिल्कुल न हो। उनका अनुभव है कि ट्रांस्फर की प्रक्रिया सिर्फ उसी समय ज्यादा होगी जब कि विषय वस्तु जो ट्रेनिंग के लिये प्रयोग में लाई गयी है समान हो जैसे ज्योमेट्री के तर्क से "तर्कशास्त्र" के तर्क में मदद मिल सकती है। क्योंकि यह दोनों में खास और सुस्पष्ट शर्तों की मदद से विशिष्ट निष्कर्षों पर पहुंचना होता है। लेकिन आम जिन्दगी की समस्याओं का हाल सोचने में जरूरी नहीं है कि गणित के तर्क से मदद ले क्योंकि आम तौर पर जिन्दगी की समस्याओं से सम्बन्धित बुत कम और अस्पष्ट शर्तें दी हुई हैं। यहां बहुत सी बातों को महज अटकल से मालूम करना पड़ता है। इस लिये गणित का तर्क यहां कुछ बहुत कारआमद साबित नहीं होता।

यह बात साबित हो चुकी है कि यद्यपि मेन्टल ट्रेनिंग के ट्रांस्फर के सिद्धान्त में कुछ सच्चाई जरूर है लेकिन इस पुराने सिद्धान्त में कोई औचित्य (माकूलियत नहीं है कि प्राचीन भाषाओं, गणित अथवा साहित्य) की ट्रेनिंग इन्सान के पूरे जीवन पर फैल जाती है। यह सिर्फ अपने सीमित क्षेत्र में कारआमद है, तमाम जिन्दगी में नहीं।

यद्यपि मेन्टल ट्रेनिंग की प्रक्रिया के ट्रांस्फर पर अब किसी को विश्वास नहीं रहा, फिर भी इसने शैक्षिक चिन्तन में ऐसा घर कर लिया है कि अब भी हमारे पाठ्यक्रम में इस की कारफरमायी (सक्रियता) नजर आती है। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अन्सारी

(पृष्ठ ३३ का शेष)

कार्रवाई करने हेतु सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि इस सन्दर्भ में किसी महिला द्वारा इस बात की शिकायत की गयी हो कि उसे इस प्रकार के परीक्षण हेतु बाध्य किया गया था मगर शासन प्रशासन के पास इस प्रकार की शिकायत शायद ही कभी किसी ने दर्ज करवाई हो। इस प्रकार की शिकायत शायद ही कभी किसी ने दर्ज करवाई हो। इस प्रकार के मामलों में कानून दोषी चिकित्सक को दंडित करने की बात करता तो अवश्य है, मगर उसका लाइसेंस भारतीय चिकित्सा परिषद ही वापस ले सकता है, जो ऐसी परिस्थितिय में कभी कोई कार्रवाई नहीं करता। कैसी विडम्बना है यह ? प्रदेश, जनपद तथा निचले स्तर पर इस प्रकार के कानून को लागू करने के संबंध में कोई प्रशासनिक व्यवस्था नहीं है और न जनसाधारण का नजरिया इस बारे में गंभीर है। परिणामस्वरूप बाल विवाह निषेध कानून, दहेज प्रतिरोध कानून आदि की भांति यह अधिनियम भी वर्तमान काल में व्यावहारिक स्तर पर सफल और प्रभावी नहीं साबित हो पा रही है।

इस समस्या के समाधान तथा भ्रूण के लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण हत्या का सशक्त कानूनी नियंत्रण हेतु आज जनजागरूकता की आवश्यकता है। इसके साथ ही हमें बेटी को बेटे से हीन समझने की परम्परागत पूर्वाग्रही मानसिक संकीर्णता को त्याग होना तथा बेटी–बेटा दोनों को समान समझना होगा। इस संबंध में जनजागरूकता हेतु सामाजिक स्वयंसेवी संगठनों को भी सक्रिय होना होगा।

कन्या हत्या

और जब जीवित गाड़ी गई लड़की से पूछा जाएगा, कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गई। (पवित्र कुर्आन ८१:८,९) इस्लाम में कन्या हत्या हराम है, इसका अपराधी जहन्नम में जलेगा।

आहार से परिपूर्ण जैतून

ग्रहीत

जैतून का पेड़ लगभग तीन मीटर ऊंचा होता है, इस में बेर की शक्ल के फल लगते है, जिन का रंग जामुनी और जाइका (स्वाद) कसैला होता है, बुन्यादी तौर पर यह पेड़ ऐशियाए कोचक, फिलिस्तीन, बुहैर–ए–रूम (रूम सागर) के खित्ते (क्षेत्र) यूनान, पुर्तगाल, स्पेन, तुर्की इटली, उत्तरी अफ्रीका अलजजाइर, त्यूनुस, अमरीका में कैलीफोर्निया, मेकीस्को, पीरो और आस्ट्रेलिया, के दक्खिनी इलाके (क्षेत्र) में पाया जाता है।

जैतून का तेल बतौर सनअत (उद्योग) हमारे यहां फ्रांस, इटली, स्पेन, तुर्की, अल्जजाइर, त्यूनुस और यूनान से आता है, हाल वर्तमान में बिलोचिस्तान से भी जैतून का तेल डिब्बों में बरामद (निर्यात) किया जाने लगा है। जैतून का फल गिजाईयत (आहार) से भरपूर है, परन्तु अपने स्वाद के कारण फल की सूरत में जियादा मक्बूल नहीं, इसके होते हुए पूर्वी तथा मध्य इटली में बहुत से लोग यह फल इसी शक्ल में और योरोप में इस का आचार बड़े शोक से खाते हैं।

लाभ :

लाल जैतून का तेल काले से अच्छा होता है। यह तबीअ़त को बहाल करता है, चेहरे के रंग को निखारता है, जहरों के खिलाफ तहफ्फुज देता है अर्थात अन्टीसेप्टिक है। पेट के कर्म को सन्तुलित करता है, पेट से कीड़े निकालता है। बालों को चमकाता है और बुढ़ापे की तकालीफ और असरात को कम करता है। जैतून के तेल में नमक मिलाकर अगर मसूढ़ों पर लगाया जाए तो मसूढ़े मजबूत होते हैं। तेल या जैतून के पत्तों का पानी फुन्सियों पर पित्ती पर और खुजली के दानों पर लगाने से फाइदा होता है। वह फोड़े जिनसे बदबू आती हो या पुराने हो गये हों उन में जलन हो वह ठीक न हो रहे हों जैतून के तेल से ठीक हो जाते हैं। जैतून के पत्तों का पानी निचोड़ कर या सूखे पत्ते मिलें तो उन को पानी में उबाल कर कुल्ली करने से मुंह और जबान के जख्म ठीक हो जाते है। जैतून के पत्तों का अरक (रस) लगाने से जिल्दी अमराज़ (चर्मरोग) ठीक हो जाता है।

नई जानकारियां :

जलन वाली जगहों पर इस का तेल या पत्तियों का रस लगाने से आराम मिलता है, इस का प्रयोग पेट की जलन को दूर करता है, पेट को नर्म करता है। इस का अचार बनाने के लिऐ गर्म नमकीन पानी या नमकीन सिर्के में भिगोया जाता है। जैतून, फालिज, इर्कुन्नसा, पट्ठों, और जोड़ों की पीड़ा में भी लाभदायक है, यह जिस्मानी कम्जोरी को भी दूर करता है। जिस्म की खुश्की दूर करने में भी फाइदा देता है। चंबल और गंज में भी फाइदा देता है, कम्जोर बच्चों और बूढ़े लोगों के जिस्म पर जैतून का तेल मलने से ताकत आती है। जैतून का तेल पेट के अन्दर के जख्म को ठीक करता है, यह बवासीर में भी लाभदायक है। इस मरज के मरीज को रात में सोते समय दो बड़े चमचे जैतून का तेल पीना चाहिए और मस्सों पर इस का मरहम लगाना चाहिए, मेंहदी के पत्तों को पीस कर जैतून के तेल में दस मिनट पका कर मरहम तैयार करें। पेट के रोगों और आंतों के कैन्सर में जैतून का तेल फाइदेमन्द पाया गया है, जैतून का तेल बराबर खाने से आंतों का कैंसर नहीं होता और अगर आंतों में अल्सर या कैन्सर हो तो जैतून का तेल जियादा दिनों तक पीने से ठीक हो जाता है।

(आग से ग्रहीत)

मज़दूर

मेराजुद्दीन

तपती गर्मी में दिखा
एक चेहरा झुलसाया हुआ!
आसरा जिस पेड़ का
वह भी था मुरझाया हुआ!!
आजीविका हेतु वह,
तोड़ रहा था पत्थर।
हार न माना जिन्दगी में,
काम में था वह तत्पर !!
दिल लगाकर अपनी कला से
उसने बनाये अमीरों के घर!
इतनी सेवा की हैं उसने
फिर आज क्यों है वह बेघर

समाज सुधारक

डॉ0 विशम्भर नाथ पाण्डेय

सलमान अली खां, लखनऊ

डॉ० विशम्भर नाथ पाण्डे का व्यक्तित्व विद्वानों की निगाह में हमेशा माननीय रहा है। उन्होंने एक सत्यवादी, बेबाक इतिहासकार के अलमबरदार, सच्चे देश भक्त और अति सज्जन पुरूष की हैसियत से हिन्दुस्तानी समाज में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई थी। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता, रवादारी और सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए वह आजीवन निष्ठा के साथ सक्रिय रहे। और पूरी ताकत से ऐसे कारणों पर रोक लगाने का निरन्तर प्रयास करते रहे जिनका सहारा लेकर स्वार्थी और समाज दुश्मन तत्व अकसर मुल्क में बदअमनी, बिखराव, नफरत और भेद–भाव का माहौल पैदा कर के कौम को लूटते और तबाह व बरबाद करते रहे हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में डाक्टर पाण्डेय ने एक हकपरस्त इतिहासकार की हैसियत से पक्षपाती इतिहाकारों के गलत, गुमराहकुन बेबुनियाद और स्वरचित ऐतिहासिक और राजनीतिक इन्द्राजात (उल्लेख) की खोज और परख करके असलियत जानने की न सिर्फ कोशिश की बल्कि सही घटनाओं का उल्लेख और कलमबन्द करके ऐसा जबरदस्त कारनामा अंजाम दिया जिस से नये आने वाले इतिहासकार हमेशा तहरीक हासिल करते रहेंगे।

डॉ० पाण्डेय मध्य प्रदेश के जिा छिंदवाड़ा के ग्राम अमरेठ में २३ दिसम्बर १९०४ को पैदा हुए थे। आप के पिता रामधर पाण्डे उन्हें प्रारम्भिक शिक्षा दिलाने के बाद उच्च शिक्षा दिलाने के इच्छुक थे। अतएव डॉ० पाण्डे ने पहले मद्रास (चैन्नई) के थियोसाफिकल इन्स्टीट्यूट और कोलकाता के शान्ति निकेलन के विश्वभारती संस्था में उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसी दौरान महात्मागांधी के नेतृत्व में देश के कोने कोने में आजादी की लड़ाई ने जोर पकड़ा और डॉ० पाण्डे १९२० में देश भक्ति की भावना से ओत प्रोत होकर इस आन्दोलन में निर्भय होकर कूद पड़े और असहयोग आन्दोलन से लेकर १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन तक बराबर बढ़चढ़ कर भाग लेते रहे। नतीजा जाहिर ही था। उन्हें पड़ताड़ना की कठोर से कठोर मुसीबतें झेलना पड़ीं और दस साल से अधिक अवधि तक अंग्रेजों के कैद में रहना पड़ा।

डॉ० पाण्डे गांधी जी की विचारधारा से अन्तिम सांस तक जुड़े रहे और उस पर अमल किया। डॉ० पाण्डे मजदूर आन्दोलन से भी बाकायदा जुड़ कर मजदूरों की भलाई के लिये बराबर काम करते रहे। वह यूपी बैंक इम्पलाईज यूनियन के संस्थापक अध्यक्ष (१९४६–४८) के अलावा यूपी रेलवे मेन्स यूनिन के अध्यक्ष (१९४६–५०) डाक व तार विभाग तथा रेलवे मेल सर्विस यूनियन के अध्यक्ष, हिन्द इन्सानी बिरादरी के उपाध्यक्ष, सेकुलर डेमोक्रेटिक फोरम के जनरल सेक्रेट्री (१९६८–७६), इलाहाबाद गान्धी शताब्दी समिति के सचिव, और इलाहाबाद अजायबघर के चेयरमैन भी रहे। इलाहाबाद में निवास के दौरान उनकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती रही। वह अपनी लोकप्रियता के कारण १९४८ से १९५३ तक इलाहाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष और उस के बाद १९६०–६१ तक इलाहाबाद नगर महापालिका के मेयर (नगर प्रमुख) भी रहे। उन्हें १९७६ में राज्य सभा सदस्य चुने गये और देश के निर्माण व विकास में हिस्सा लिया। डॉ० पाण्डे की असाधारण राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक सेवा को ध्यान में रखते हुए उन्हें १९८३ में उड़ीसा का गवर्नर बनाया गया उन्हें दी स्प्रिट आफ इण्डिया का सम्पादन भी सफलता पूर्वक किया। उनकी बहुमूल्य सेवाओं के प्रति सम्मान स्वरूप हिस्ट्री आफ इस्लामिक कल्चर उन्हें पद्मश्री के एवार्ड से सम्मानित किया गय।

डॉ० विशम्भरनाथ पाण्डे ने अपने जीवन में सब से महत्वपूर्ण कारनामा यह अंजाम दिया कि उन्होंने मुस्लिम हुकमरानों विशेषकर शहनशाहों के बारे में सही और यथार्थ पर आधारित इतिहास लिखकर उन से जोड़ी गयी गलत बातों को समानरूप से निरस्त कर दिया। उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद, इस्लाम और मानवता, इस्लामी संस्कृति का इतिहास, मुस्लिम देश भक्त, इण्डिया एण्ड इस्लाम, हिस्ट्री आफ इस्लामिक कल्चर, हिस्ट्री आफ हिन्दू मुस्लिम प्राबलम्ज, ए डायरी आफ मुस्लिम सूफी, और मुस्लिम सूफी की जीवन झांकी जैसे अनेक किताबें लिख

कर ऐसा महान कार्य किया जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। डॉ० पाण्डे ने अपनी किताब पैगम्बर मुहम्मद में हजरत मुहम्मद सल्ल० की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि इस्लाम के अनुसार अल्लाह का मजहब इस लिये नहीं है कि एक इन्सान दूसरे इन्सान से नफरत करे बल्कि इसलिए है कि एक इन्सान दूसरे इन्सान से मुहब्बत करे और सब एक ही परवरदिगार की इबादत के धागे में बन्धकर एक हो जायें। जब सबका पालनहार एक है, सब का मकसद एक उसी की इबादत है, हर इन्सान को अच्छे बुरे का बदला मिलना है तो फिर अल्लाह और मजहब के नाम पर भेद–भाव और लड़ाईयां क्यों हों।

"इस्लाम ने बार–बार इस बात पर जोर दिया है कि सब मजहब सच्चे हैं क्योंकि बुनियादी मजहब एक है और वह है इन्सानियत अर्थात प्रेम–धर्म। मगर इन्सानों ने अपनी गुमराही से अलग टोलियां बना ली हैं। इस गुमराही से लोग निकल आयें तो सब मजहबी झगड़े स्वतः मिट जायें।" उन्होंने इस्लाम धर्म की खूबियों और हजरत मुहम्मद सल्ल० की पवित्र जीवनी का उल्लेख करते हुए हिन्दुस्तान और अरब दुनिया के सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्धों को उजागर करते हुए लिखा है कि सातवीं सदी ईस्वी के शुरू में ईरान से लगे हुए हिन्दुस्तान के राज्यों के साथ अरब व्यापारियों के व्यापारिक सम्बन्ध कायम थे। हिन्दुस्तान के इन इलाकों के हिन्दुस्तानी कबीलों और ईरानियों ने इस्लाम कुबूल किया तो व्यापरिक सम्बन्धों के साथ कलचरी सम्बन्ध भी बढ़े। मुसलमान हिन्दुस्तान को दुनिया का सबसे अधिक सभ्य देश समझकर इस की बेहद कद्र और इज्जत करते थे। हिन्दुस्तान की तारीफ में इस्लाम के पैगम्बर और उनके सहाबियों की रिवायतें अक्षरशः पेश की जाती थीं।"

इन रिवायतों के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत मतभेद हो सकता है। लेकिन यह बात दावा के साथ कही जा सकती है कि शुरूअ जमाने के इस्लामी लिट्रेचर में हिन्दुस्तान की तारीफ दर्ज है। हजरत आदम पहले पैगम्बर थे और अल्लाह ने सब से पहले अपना हुक्म उन्हीं को सुनाया और आदम अ० चूंकि उस समय हिन्दुस्तान में थे इसलिए हिन्दुस्तान को ही सब से पहले अल्लाह का पैगाम सुनने का गौरव प्राप्त हुआ। मुमकिन है शायद इसी लिये इस्लाम के पैगम्बर ने फरमाया, "मैं हिन्दुस्तान से आती हुई अल्लाह की मारफत की भीनी भीनी खुशबू महसूस कर रहा हूं।"

सिर्फ इतना ही नहीं डॉ० पाण्डे ने बंगाल के सुल्तान सेन शाह के हुक्म से रामायन और महाभारत जैसे धर्म ग्रन्थों का संस्कृत से बंगला भाषा में अनुवाद कराने, औरंगाबाद के वाइसराय मुर्शिद कुली खां का रेवेन्यू विभाग में सभी अफसरों और वजीर के पदों पर हिन्दुओं को नियुक्त करने, शिवाजी के बेऔलाद दामाद मालो जी का अहमद नगर के सूफी सन्तशाह शरफ के मजार पर हाजिरी देकर मांगी गई औलाद की मिन्नत का पूरा होना और स्वयं शिवाजी का बाबा याकूत को अपना पीर मानकर और युद्ध में विजय श्री के लिये उन से मुराद मांगना, मुसलमानों के मुकदमों के बारे में शिवाजी का मुस्लिम काजियों से सलाह कर के फैसला करना, शिवाजी की फौज में दौलत खां और दरिया खां जैसे कमान्डरों की नियुक्ति, आदि का उल्लेख करने के बाद लिखा है कि शिवाजी के दिल में औरतों, कुरआनशरीफ और मस्जिदों की बेहद इज्जत थी।

एक बार शिवाजी के एक कमान्डर सूरत नगर को लूट कर वहां के मुगल हाकिम की सुन्दर पुत्री को कैद कर के ले आये और उसे शिवाजी के दरबार में पेश करते हुए कहा, "महाराज! मैं आप के लिये यह नायाब तोहफा लाया हूं।" इतना सुनना था कि शिवाजी के आंखों से अंगारे बरसने लगे। शिवाजी ने कमान्डर से कहा, "तुम ने न सिर्फ अपने मजहब की तौहीन (अपमान) की है बल्कि अपने महाराज के माथे पर कलंक का टीका लगाया है। इसके बाद शिवाजी ने बहुत से तोहफे देकर शहजादी को उसके मां–बाप के पास फौजी टुकड़ी की निगरानी में वापस भेज कर उस मुगल हाकिम से इस गलती के लिये माफी का इजहार किया।

इसी तरह डॉ० पाण्डे ने औरंगजेब की रवादारी (सह–हृदयता) इन्साफ पसन्दी और रियायः परवरी की तारीफ करते हुए लिखा है कि, "शिवाजी के पोते को आरंगजेब ने आगरा के अपने महल में कैद कर रखा था, लेकिन उसने पूरी तरह इस मासूम की तालीम का ख्याल रखा। हिन्दू पंडितों को बुलाकर उसकी धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था की गई। अपने बाप सम्भाजी के मरने के बाद साहू शिवाजी की सल्तनत का वारिस हुआ। औरंगजेब के एहसान और मुहब्बत के एहसास से गमजदः वह औरंगजेब के जनाजः के साथ खुल्दाबाद तक गया। कब्र में

मिट्टी डालते वक्त उसकी आंखें आसुओं से तर थीं।

डॉ० पाण्डे जिन दिनों इलाहाबाद नगर पालिकार अध्यक्ष थे तो वहां के त्रिवेणी संगम के पास स्थित प्राचीन सोमेश्वर नाथ महादेव मन्दिर के हक मिलकियत को लेकर दाखिल खारिज का एक मामला उन के सामने आया जिस में एक फरीक ने दावा के तौर पर औरंगजेब का फरमाने शाही भी नत्थी किया था जिस में मन्दिर के पुजारी को ठाकुर जी (मूर्ति) के भोग और पूजा के लिये जागीर में दो गांव दिये गये थे। उन्होंने सर तेजबहादुर की तस्दीक और सलाह के बाद हिन्दुस्तान के खास खास मन्दिरों के जिम्मेदारों को खत लिख कर मुगल बादशाहों विशेषकर औरंगजेब के बारे में जिसे अंग्रेज इतिहासकारों ने कथित रूप से मंदिर तोड़ने वाला करार दे रखा था, मालूमात भेजने की प्रार्थना की। इस के जवाब में महाकाल मन्दिर, उज्जैन, बाला जी मन्दिर चित्रकूट, कामाख्या मन्दिर गोहाटी, जैन मन्दिर गिरनार, दिलवाड़ा मन्दिर आबू, गुरूद्वारा राम राय, देहरादून आदि से उन्हें सूचना उपलब्ध करायी गई कि "उन को जागीरें औरंगजेब ने प्रदान की थीं।"

डॉ० पाण्डे ने इसी तरह शहनशाह अकबर और महाराणा प्रताप सिंह के बीच हल्दी घाटी के युद्ध का उल्लेख करते हुए साबित किया है कि "यह लड़ाई किसी तरह भी न फिरकावरियत की लड़ाई थी और न मजहबी। क्योंकि जहां एक तरफ अकबर की सेना के सेनापति राजा मान सिंह थे और अधिकांश फौजी राजपूत थे तो दूसरी तरफ महाराण प्रताप सिंह की सेना के सेनापति राना और खान सूर थे। इस युद्ध में ताज खां ने भी एक हजार पठान सिपाहियों के साथ महाराना प्रताप सिंह का साथ दिया था।"

डॉ० पाण्डे ने सिखों और मुसलमानों के बीच मुनाफरत (दुराव) को दूर करने की कोशिश करते हुए इतिहास के प्रमाणों के प्रकाश में यह स्पष्ट भी किया है कि सिखों के गुरूगोविन्द सिंह जी अनेक अवसरों पर नबी खां, गनी खां और जनरल सैयद बेग जैसे वीर बांकुरों ने बराबर मदद की और उनकी फौज में सैकड़ों मुसलमानों ने शामिल होकर न केवल संघर्ष किया बल्कि अपनी जानें तक दीं। एक मशहूर बुजुर्ग बदरूद्दीन ने, जो पीर बौद्ध शाह के नाम से जाने जाते थे, अपने चार बेटों, दो भाइयों और एक हजार पठानों को साथ लेकर युद्ध क्षेत्र में गुरू गोविन्द सिंह जी का साथ दिया और शहीद हुए।

डॉ० पाण्डेय जिन दिनों इलाहाबाद में निवास कर रहे थे तो उन्हें कोलकाता यूनीवर्सिटी के संस्कृत विभागाध्यक्ष महामहोपाध्याय डॉ० हरि प्रसाद शास्त्री द्वारा लिखित भारत के इतिहास के विषय पर पाठ्यक्रम में शामिल पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक में मैसूर के शासक टीपू सुल्तान के बारे में लिखा था कि "तीन हजार ब्रह्मणों ने इसलिये आत्महत्या कर ली कि टीपू सुल्तान उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहता था। डॉ० पाण्डे ने इस बहुतानतराशी की सदाकत जानने के लिये फौरन डॉ० शास्त्री को खत लिख कर उन से पूछा कि इस उल्लेख का स्रोत क्या है? इस सिलसिले में डॉ० पाण्डेय ने अपने तहरीर व तकरीर में इसघटना का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया है कि "कई बार की याद दिहानियों के बाद डॉ० शास्त्री ने जवाब दिया कि "उन्होंने यह मालूमात मैसूर गजेटियर से हासिल की हैं।" उस समय मैसूर गजेटियर न इलाहाबाद में मौजूद था न ही इम्पीरियल (अब नेशनल) लाइब्रेरी कोलकाता में। लेहाजा मैंने उस समय के मैसूर यूनीवर्सिटी के वाइसचांसलर हरजेन्द्र प्रसाद को खत लिखकर डा० शास्त्री के बयान की पुष्टि चाही। उन्होंने मेरे खत को प्रोफेसर श्रीकान्त के पास भेज दिया जो उस समय मैसूर गजेटियर के नये एडीशन के तैयारी में व्यस्त थे। प्रोफेसर श्रीकान्त ने लिखा कि तीन हजार ब्राह्मणों की आत्महत्या का उल्लेख कहीं नही है और मैसूर के एक विद्यार्थी की हैसियत से मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि ऐसी कोई घटना नहीं हुई। उन्होंने यह भी सूचना दी कि टीपू सुलतान का प्रधान मन्त्री एक ब्राह्मण था जिसका नाम पूर्निया था और उसका सेनापति भी कृष्ण राव नाम का एक ब्राह्मण था। उन्होंने मुझे १५६ ऐसे मन्दिरों की सूची भी उपलब्ध की जिन्हें टीपू सुल्तान सालाना इमदाद दिया करता था। मुझे श्रंगेरी मठ के जगतगुरू शंकराचार्य के टीपू सुल्तान के नाम से लिखे हुए एक दर्जन कन्नड़ भाषा के पत्रों की फोटोकापी भी भेजी गयी जिस से जाहिर होता है कि शंकराचार्य और टीपू सुल्तान में बेहद मुहब्बत थी। इस घटना के बारे में डॉ० पाण्डे ने जो पत्र व्यवहार किया उसे कोलकाता यूनीवर्सिटी के चांसलर को भेज कर उन से प्रार्थना की कि यदि वह इस पत्र व्यवहार से

सन्तुष्ट हैं कि शास्त्री की किताब में दिया हुआ वाक्य गलत है तो इस पर कार्यवाही करें अन्यथा यह पत्र–व्यवहार मुझे वापस कर दें। बहुत जल्द न सिर्फ वाइसचांसलर का जवाब आया बल्कि उस के साथ साथ उनका हुक्मनामा (आदेश पत्र) भी आया कि "शास्त्री की इतिहास की पुस्तक हाई स्कूल से खारिज की जाती है।"

डॉ०पाण्डे ने जिस प्रकार धार्मिक भेदभाव को रोकने का प्रयास किया ठीक उसी तरह उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान करने में कोई कसर उठा न रखी। उन्होंने हिन्दी उर्दू विवाद को अंग्रेजी राजनीति का जादू करार देते हुए लिखा कि उनकी फूट डालो और हुकूमत करो की पालीसी के तहत अन्ततः उर्दू मुसलमानों की भाषा और हिन्दी हिन्दुओं की भाषा करार पा गयी। इस प्रवृत्ति पर विराम लगाते हुए डॉ० पाण्डे ने दावा किया कि "उर्दू और हिन्दी वास्तव में दो अलग अलग भाषायें नहीं हैं, भाषा विज्ञान की कसौटी पर परखिये, कोई सैद्धान्तिक अन्तर नजर नहीं आता। ..... हिन्दी और उर्दू दोनों एक मां की बेटियां हैं। हां, अब दोनों की अलग अलग सुनिश्चित और साहित्यिक हैसित है। यह सही है कि मुसलमान सूफियों, सन्तों और शायरों ने उर्दू का सिंगार किया, लेकिन सैकड़ों हिन्दू साहित्यकारों ने भी उर्दू को संवारने में हिस्सा लिया अगर उर्दू में इस्लामी मजहब और कल्चर पर किताब लिखी गई तो आप को हिन्दू मजहब और कल्चर की भी उर्दू में काफी किताबें मिलेंगी। उर्दू तो असल में हिन्दुस्तान की भाषा है। इस का भूत और वर्तमान हिन्दुस्तान से अलग नहीं हो सकता। इस के इतिहास में हिन्दू, मुसलमानों के मेल जोल की कहानी है। ..... इसका भविष्य हिन्दुस्तान से जुड़ा है। पाकिस्तानी प्रान्तों की भाषा बलोचिस्तान में बलोची, सूबा सरहद में पश्तो है। वहां कहीं भी बोलचाल की भाषा उर्दू नहीं। बेशक उत्तर प्रदेश और बीहार से जो लोग यहां गये हैं उनकी भाषा उर्दू नहीं। उर्दू हिन्दुस्तान की बेटी है। यहीं यह पैदा हुई। इसकी शिराओं में संस्कृत और प्राकृत का खून बहता है। यह यहीं फली फूली। इसके बदन में लोच है। चाल में इठलाहट है। इसे देखकर लोग झूमते हैं। मुशायरों में सुनने वाले इस के बोल सुनकर मस्त हो जाते हैं। सर धुनते है। इसके सामने एक सुन्दर रौशन और बेपयां मैदान है। हिन्दुस्तान की पन्द्रह भाषाओं में यह अकेली वह भाषा है जो हिन्दुस्तान की एकता की रिवायत की तर्जुमानी करती है।"

डॉ० पाण्डेय ने सभ्यता और संस्कृति, एकता व मेल जोल, रवादारी और खैरसगाली, भाईचारा और प्रेम और देश की अखण्डता को मजबूत बनाये राख्ने के लिये प्रशंसनीय कार्य किया है। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी में ईरानी, पारसी, मिस्री, यूनानी, बाबुली, रूमी, इस्लामी और हिन्दुस्तानी सभ्यता और संस्कृति के विषय पर महत्वपूर्ण और मालूमाती इतिहास की किताबें लिखकर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है। उनकी किताबों में कल्चरल यूनिटी आफ इण्डिया, गान्धी और हिन्दू–मुस्लिम एकता, भारतकी सांस्कृतिक एकता, हिन्दुस्तान में कौमी एकजहती की रवायत, सदभावना के सेतु, नेशनल इन्टीग्रेशन, कर्मवीर पंडित सुन्दरलाल जैसी दस्तावेजी किताबें विशेष महत्व रखती हैं। संक्षेप में डॉ० विशम्भर नाथ पाण्डे ने केवल स्वयं एक अच्छे और बहुत अच्छे इन्सान थे बल्कि वह आजीवन दूसरों को भी अच्छा और मिसाली इन्सान बनाने के लिए कार्य करते रहे।

(उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा : २३.१२.२००७ से साभार)

प्रस्तुति एम० हसन अंसारी

(पृष्ठ २४ का शेष)

है और आपस में बैर व नफरत पैदा हो जाती है औरउसका वकार (दृढ़ता) समाप्त हो जाता है। लेकिन अगर यह सब चीजें न हों तो ऐसा हंसी मजाक करना जाइज होगा। जैसा कि आप (सल्ल०) लोगों के के दिलों को जोड़ने और उनको अपने से निकट करने के लिए किया करते थे। यह सुन्नत और पसन्दीदा अमल है। इस बात को अच्छी तरीके से समझ लीजिए इसकी बहुत जरूरत पड़ती है।

अच्छा इंसान वही है जो अपनी गलती और दूसरों की अच्छाई पर नजर रखता है दुनिया में कोई ऐसा इंसान नहीं जिस से गलती न होती हो। इन्सान तो गलती का पुतला है। गलती किसी से भी हो सकती है। इस लिए किसी पर हंसने किसी का मजाक उड़ाने से पहले यह भी सोंच लें कि आने वाले कल में कोई आप पर भी हंसेगा।

चार यार

जहां में जो आइना दारे नबी हैं
हकीकत में वो चार यारे नबी हैं
रफीके नबी गमगुसारे नबी है
फिदाए नबी जांनिसारे नबी है
बड़ा उन का रुत्बा है अल्लाहु अकबर
अबू बक्र फारूको उस्मान हैदर

इक़बाल अहमद आज़मी

हंसी दुख का इलाज है

शमशेर आलम फतेहपुरी

मुस्कुराना हंसना या कहकहे लगाना जिन्दा दिली की निशानी है। वह लोग जिनके अन्दर हंसने की आदत होती है वह बहुतेरी अनजानी मुसीबतों आकस्मिक संकटों और सामयिक दुखों से बचे रहते हैं। "मौलाना हाली" ने "यादगारे गालिब" में गालिब को "हैवाने जरीफ" (प्रसन्नचित मनुष्य) कहा है गालिब को हैवाने जरीफ (प्रसन्न चित्त मनुष्य) कहने का कारण यह है कि वह हास्य के मनुष्य थे उन्होंने संकट की घड़ी में घुटने टेकना सीखा ही नहीं था। १८५७ की कयामते सुगरा (महाक्रान्ति) के वह चश्मदीद गवाह थे उन्होंने अपनी आंखों से दिल्ली को तबाह व बरबाद होते हुए देखा था। उनके बहुत सारे मित्र इस संग्राम के भेट चढ़ गए थे ऐसी अवस्था में गालिब की जगह कोई दूसरा मनुष्य होता तो शायद ही वह इस प्रलयकारी अवस्था का सामना कर पाता गालिब ही वह जिन्दादिल इंसान थे इस कठिन स्थिति में भी जीवित रहने का सामान जमा कर लिया।

तात्पर्य यह है कि मुस्कराने एवं हंसने के बहुत से लाभ है हंसने से मन बहलता है। चेहरे पर निखार आता है। डाक्टरों का कहना है कि हंसने से फेफड़े साफ होते हैं। फेफड़ों में ताजा हवा पहुंचती है जिसके कारण आदमी पहले के मुकाबिल ज्यादा अच्छी तरह सांस ले पाता है। वह लोग जो हमेशा हंसते रहते हैं वास्तव में उनके चेहरे पर हमेशा खुशी की लहर दौड़ती है वह इस फन से अपने आस पास मित्रों का एक बड़ा झुण्ड जमा कर लेते हैं। वह जहां भी होते हैं अपने इस फन के द्वारा महफिल के अन्दर एक निखार पैदा कर देते हैं और लोगों के अंदर एक उमंग और जोश पैदा कर देते हैं। अगर संयोग से उन पर कोई संकट आ जाए तो वह अच्छी तरह से उसका मुकाबला करते हैं। इस शेर के मिस्दाक हैं

हजारों गम सहे लेकिन न आया आंख में आंसू
हम अहले जर्फ हैं पीते हैं छलकाया नहीं करते।

जो लोग यह सोच रखते हैं कि आफिस में काम के दौरान कतई हंसना या बोलना न चाहिए क्योंकि इस से काम में खलल पड़ता है। तो उन्हें ये सोच बदल देनी चाहिए। प्रसिद्ध विशेष 'कर्सराबर्ट' अपनी अनुसंधान से यह प्रमाणित किया है कि आफिस (कार्यालय) में थोड़ा बहुत अवश्य हंसना बात करना चाहिए। कोलम्बया यूनीवर्सिटी में राबर्ट ने अपने अनुसंधान के द्वारा यह परिणाम निकाला है कि नौकरी से सम्बन्धित जगहों पर हंसी मजाक करते रहने से काम पर अच्छा प्रभाव पड़ता है ऐसी आदत प्राकृतिक के साथ साथ ताकत में भी बढ़ोत्तरी करती है और इसके कार्यक्षमता में भी बेहतरी आती है। राबर्ट का कहना है कि कोई भी आरगिनाइजेशन (संगठन) हो वहां हंसी मजाक का माहौल जरूरी है क्योकि इस से माहौल खुशगवाहर रहता है और कर्मचारियों के बीच एक जोश पैदा होता है। कुछ देर की यह हंसी मजाक कर्मचारियों के तनाव को कम करने में सहायक होती है और उनके बीच आपसी मेल जोल पैदा करती है।

यद्यपि इस तरह का हंसना केवल हंसना हंसाना और मजाक लेना ही नही होता बल्कि हंसी मजाक के साथ-साथ रवाबित को उसतवार करना भी इसका खास मकसद होता है। हंसने और दूसरों को हंसाने से मन प्रसन्न होता है। लेकिन हंसी और मजाक के दौरान यह बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि हर इंसान जौक और आदत के एतबार से अलग होता है इसलिए हंसी और मजाक के समय एक दूसरे के मिजाज का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि कभी-कभी यह हंसी मजाक दिलों के अंदर भेदभाव पैदा कर देती है। इस लिए यह कतई मुनासिब नहीं कि आप दूसरे का दिल दुखायें या किसी का मजाक उड़ायें।

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि इस्लाम में उस हंसी मजाक से रोका गया है जो हद से बढ़ा हुआ हो और यह कि आदमी हमेशा हंसता ही रहे और कभी सन्जीदा व गम्भीर न हों इस से दिल कठोर हो जाता है और आदमी अल्लाहतआला की याद और दीन के अहम कामों से लापरवाह हो जाता है और अधिकतर इससे लोगों को तकलीफ पहुंचने लगती

(शेष पृष्ठ २३ पर)

हदीसे जिब्रील अलैहिस्सलाम

(इस्लाम, ईमान और इहसान)

सैयदुल मुर्सलीन, महबूबे रब्बिल आलमीन हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाब–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बीच बिराजमान थे कि एक अनजान आदमी आया और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने घुटने मोड़ कर (दोज़ानो) बिल्कुल मिल कर बैठ गया, और प्रश्न करने लगा, उसने पूछा कि इस्लाम क्या है? हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि :–

इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

और नमाज़ क़ाइम करो। (अर्थात जमाअत से भली भांति पढ़ा करो)

और धन की ज़कात अदा करो।

और रमज़ान के रोज़े रखा करो।

रास्ता ठीक हो और रास्ते का ख़र्च हो तो हज करो।

अनजान आदमी ने कहा कि आपने सत्य कहा, सहाबः (रज़ि०) को आश्चर्य हुआ कि ख़ुद ही पूछते हैं और ख़ुद ही उत्तर की पुष्टि (तसदीक़) करते हैं, फिर अनजान आदमी ने पूछा कि ईमान क्या है? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उत्तर दिया कि :–

ईमान लाओ अल्लाह पर,

उसके फ़िरिश्तों पर,

उसकी किताबों पर

उसके रसूलों पर

क़ियामत के दिन पर

तथा अच्छी बुरी तक़दीर पर (कि दोनों अल्लाह की ओर से हैं) अनजान ने कहा आपने सत्य कहा और प्रश्न किया कि इहसान क्या है? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उत्तर दिया कि :

अल्लाह की अ़िबादत इस प्रकार करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है, फिर अनजान आदमी ने क़ियामत के सम्बन्ध में पूछा (कि कब आयेगी) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उत्तर दिया कि इस सम्बन्ध में उत्तर देने वाला पूछने वाले से अधिक नहीं जानता (अर्थात इस का ज्ञान न तुम को है न हम को) फिर उस की निशानियां पूंछी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ियामत की कुछ निशानिया बताईं जब वह चले गये तो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सहाब–ए–किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को बताया कि यह जिब्रील (अलैहिस्सलाम) थे जो तुम को तुम्हारा दीन सिखाने आये थे।

इस हदीस को अब्दुल्लाहब्निअुमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने अपने वालिदे मुकर्रम हज़रते अुमर से सुना और बयान किया।

सभ्यताओं के युद्ध में विजेता कौन ?

लेखक : एन.साक़िब अब्बसी ग़ाज़ीपुरी

वर्तमान परिवेश में बहस का सबसे मुख्य मुद्दा ये है कि आलमी तहज़ीब में कौन सा धर्म महान है। मीडिया के अधिकतर श्रेत्र ईसाइयों और यहूदियों के कब्ज़े में हैं। अतः वह इस्लामी संस्कृति के मुकाबले में स्वंय को हर ऐतबार से सवोत्तम बताते हैं। हिन्दुस्तान में हिन्दू धर्म या विश्व में जितने भी धर्म हैं वह इस्लाम के मुकाबले में अपने को महान बताते हैं। क़ाबिले गौर है कि समस्त सभ्यताओं का मुकाबला इस्लामी संस्कृति से ही है।

पश्चिम के अधिकतर और एशिया के कुछ लेखक व पत्रकारों ने इस्लामी संस्कृति को हमेशा ही तोड़ मरोड़ कर पेश किया हैं, चाहे वह सलमान रूश्दी हो या तस्लीमा नसरीन, अरूण शौरी हो या हिंगटन, एक लम्बी सूची है इस्लाम के विरूद्व लिख कर पृसिद्वि पाने और पैसा कमाने वाले लेखकों को जिनका हृदय सत्य से खाली है।

उन्ही लोगों के माध्यम से ये मुद्दा बड़े जोर व शोर से उठाया जाता रहा है कि इस्लामी संस्कृति का दूसरा नाम अन्यांय है किन्तु जहाँ तक न्याय का प्रश्न है तो इस्लाम ने जितना महत्व न्याय की बहाली को दी है किसी ओर धर्म ने नहीं दी है। हज़रत मुहम्मद स० ने कहा कि "बनी इसराइल की ये हालत थी के उन में जब कोई उच्च स्तर का व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़देते,दुर्बल व निम्न स्तर का व्यक्ति चोरी करता तो उसका हाथ काट डालते, अल्लाह की क़सम अगर मेरी बेटी फातिमा रजी० भी ये पाप करती तो मै उसका हाथ काट देता"क्या ये विश्व के लिये आदर्श नहीं है? खलीफा सानी हज़रत उमर रजी० जिन्हे विश्व न्याय प्रिय होने के कारण फारूक़े आज़म के नाम से जानता है। जब उनके पुत्र ब्लात्कार के जुर्म में गिरफ्तार होते है तो उन्हे इस्लामी विद्यि के अनुसार सौ कोड़े मारने का आदेश देते हैं जिसके कारण उनके लाड़ले पुत्र की मृत्यू हो जाती हैं। क्या आज तक कोई राजा अपने बेटे के साथ ऐसा कर पाया है ? क्या ऐसा उदाहरण किसी दूसरे धर्म या सभ्यता में मिल सकता है? सत्य तो ये है कि अगर हम विश्व के किसी भी भी धार्मिक विद्यि का मुक़ाबला इस्लामी विद्यि से करेगें तो अवश्य ही इस्लाम का पलड़ा भारी पाऐंगें। ये वही इस्लामी संस्कृति है जहाँ हम उच्चधिकारी व निर्बल व्यक्ति के बीच कारागार में कोई अन्तर नहीं पाऐंगे। हिन्दुओं की धार्मिक "मनुस्मृति" के अनुसार बाहम्णों के सर का बाल मुंड देना ही सब से बड़ी सज़ा है किन्तु दूसरे जातियों के लिये जानलेवा सज़ा तय है।

आइये अब संस्कृति सभ्यता के दूसरे पहलुओं पर दृष्टि डालते हैं। गर्व के साथ कहा जा सकता है कि इस विषय पर भी इस्लाम ने सभी संस्कृतियो को अधिक पीछे छोड़ दिया है। उस ने बराबरी का ऐसा उदाहरण विश्व के सामने पेश किया है जो चोदह सदियाँ बीत जाने के बावजूद भी लोगों को आश्चर्य में डालती है। इस्लाम में सभी मान व बराबर है, कोई बड़ा है न छोटा, जिस कुऐं से धनी पानी पी सकता है, उसी से निर्धन भी पी सकता है। मनुष्य मे अगर अन्तर किया सकता है ता केवल तक़्वा व परहेज़गारी की बुनियाद पर अतः जो अल्लाह से अत्यधिक भय खाने वाला होगा वही आदर व गर्व का अधिकारी होगा। हज़रत मुहम्मद स० का कथन है कि "ऐ लोगों सुन लो! बेशक तुम्हारा रब एक है सुन लो न अ़रबी को अ़जमी पर न अ़जमी को वरीयता है , हाँ तक़्वा व परहेज़गारी के कारण किसी को किसी पर वरीयता दी गई है"। जबकि हिन्दू धर्म में "मनुशास्त्र" के अनुसार चार जाति है। ब्राहम्ण सब से उच्चतम है वहीं शुद्रों की हैसियत जानवरों से भी बदतर हैं। उन्हे न जीने का अधिकार है न पूजा–पाठ करने का, वह हिन्दू धर्म के कोई भी पुस्तक पढ़ने का अधिकार नहीं रखते हैं। ईसाई धर्म में भी पादरी के सिवा कोई और बाइबिल पढ़ने का अधिकारी नहीं है। इस्लाम में इस प्रकार का कोई अंकुश नहीं है। राजा हो या प्रजा, शिक्षित हो अशिक्षित, छोटा हो या बड़ा सभी बराबर हैं, शाइरे मशरिक अल्लामा के अनुसार –

एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद व अयाज
न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज

इस्लाम ने केवल उपासना में बराबरी का उदाहरण नहीं पेश बल्कि

जीवन के हर क्षेत्र में बराबरी व न्याय को स्थापित किया जिसका ऐतराफ इस्लाम के कट्टर विरोधियों ने भी किया है।

इस्लाम ने नारी को जो अधिकार दिया है किसी दूसरे धर्म ने नहीं दिया है। इसके बावजूद इस विषय पर पश्चिम हमेशा गलत निगाहें डालता है और ईर्ष्या करता रहता है। पश्चिम को ठीक प्रकार से ज्ञात है कि इस्लाम ही नारी के अधिकार का प्रहरी है, परन्तु उनको हकीकत के एतराफ की ताफीक नहीं होती। बल्कि वह हर मोड़ पर इस्लाम के विरूद्ध विष उगलता रहता है।

वर्तमान परिवेश में जिसे देखिये वह इस्लाम पर कीचड़ उछाल रहा है। खास तौर पर मुस्लिम पर्सनल लॉ को निशाना बनाया जा रहा है, बेधड़क कहा जाता है कि इस्लाम में औरत का कोई मुकाम नहीं है। औरत दासी है, मुसीबत की मारी है, मुसलमान मर्द अपनी औरतों को हर समय मारते–पीटते रहते हैं और बेझिझक तीन तलाक दे डालते हैं। ये एक सुनियोजित षडयंत्र है इस्लाम को बदनाम करने के लिए। मुसलमानों को इस षडयंत्र को समझना चाहिए और अपना स्वयं सुधार करना चाहिए। अशिक्षित मुसलमानों को समझाने की आवश्यकता है कि वह अपनी हरकतों से इस्लाम की रूस्वाई का सामना न करे और विरोधियों के हाथ ऐसे हथकंडे न थमा दे जिस से वह हमारे ही ऊपर वार कर दें।

हमें ज्ञात है कि विश्व के किन–किन धर्मों व सभ्यताओं ने औरतों के साथ कैसे–कैसे अत्याचार किये हैं। क्या यूनानियों के यहां बीवी को दासी बनाकर नहीं रखा जाता था? और जब कभी उस से कोई गल्ती हो जाती तो शौहर उस की गर्दन उड़ा देता, और कोई पाप हो जाता तो उसकी गर्दन में रस्सी डाल कर शौहर घोड़े पर बैठ कर उसे दौड़ाता, आप सहज अनुमान लगा सकते हैं कि उस असहाय–अबलानारी की क्या हालत होती रही होगी। इसी प्रकार अरब में इस्लाम से पहले पिता को अधिकार था कि वह बेटी को जिन्दा गाड़ दे। भारत में औरत को इन्सान नहीं समझा जाता था परन्तु जब इस्लाम आया तो उसने औरत को घर की रानी बना दिया, उसको विरासत में हक दिया, उस की राय को आजादी दी, उसे जीने का अधिकार दिया। पश्चिम तो विवाह के बाद औरत से उसका नाम तक छीन लेता है और वह मिसेज के नाम से पुकारी जाती है अब तो हमारे देश में इसकी नकल की जा रही है। आप विवाह समारोह का कोई भी निमंत्रण पत्र उठाकर देख लें कि क्या उस पर ये नहीं लिखा होता। मिसेस और मिस्टर फलां कोआडियली इनवाइटेड जो धर्म या समाज औरत का नाम तक छीन ले वह भला उसको क्या दे सकता है। इस्लाम ने तो मां के चरणों के नीचे स्वर्ग रख दिया है। अतः मुसलमानों को चाहिए कि इस्लाम के विरोधियों को प्रोपगंडे का शिकार नहीं और अपने घरेलू जीवन को इस्लाम के सांचे में ढाल ले।

हिन्दू धर्म में अनगिनत देवियों की पूजा की जाती है किन्तु उनकी धार्मिक पुस्तकों में औरत की क्या हैसियत है उस पर दूर दृष्टि डालते हैं शत पथ ब्राह्मण के अनुसार नारी के साथ कोई मित्रता नहीं उनका हृदय भेड़ियों जैसे हैं अर्थात वह धोखेबाज है। इसी पुस्तक में एक जगह है कि स्त्री, शुद्र, कुत्ता और कौवा में झूट, पाप और अन्धकार रहता है। महाभारत पर्व में है कि औरत से बढ़कर कोई मक्कार नहीं है, और वह उस्तरे की धार है, विष, सांप और अग्नि है। इसी प्रकार हिन्दुओं की लगभग सभीधार्मिक पुस्तकों में नारी को नरक की ओर मार्ग दिखाने वाला बताया गया है। वहीं दूसरी ओर इस्लाम में औलाद के महत्व को बताया गया है कि लड़के तुम्हारे लिये नेअमते हैं उन पर अल्लाह का शुक्र करो और लड़कियां बाप की हसनात में दाखिल है और पुण्य को स्वर्ग में पहुंचाती हैं तो तुम्हें स्वर्ग में भी पहुंचाने का कारण बनेंगी।

इस्लाम का एक खास उसूल है कि वह गिरे हुए को उठाता है, दबे कुचले को उभारता है। अतः सबसे अधिक दुर्बल व निर्बल नारी थी जिस पर इस्लाम ने अत्यधिक उपकार किया कि जब वह शादी शुदा हो गई तो शौहर से कहा जा रहा है तुम आदर के अधिकारी व सफल व्यक्ति तभी बन सकते हो जब उस के साथ नर्मी का व्यवहार करोगा और जब वह मां बन गई तो औलाद से कहा जा रहा है कि तेरी मां कै चरणों के नीचे स्वर्ग है।

ये बात साफ है कि इस्लाम धर्म का कोई मुकाबला नहीं, हर धर्म व संस्कृति उसके आगे मात खा जायेगी। ये सत्य है कि आज संवेदनशील परिस्थितियो से गुजर रहा है और मुसलमान हर जगह बेइज्जत हो रहे हैं और रात्रि के अंधकार में जिन्दगी गुजार रहे हैं, मगर

नहीं है न उम्मीद इकबाल अपनी कश्ते वीरान से
जरा नम हो तो ये मिट्टी बड़ी जरखेज है साकी।

उलमा की मज़बूत आवाज़

हिसाम सिद्दीकी

अट्ठारह सौ सत्तावन की जंगे आजादी के बाद देवबन्द से मुल्क की मजहबी कियादत ने शायद पहली बार दहशतगर्दी के खिलाफ एक मजबूत आवाज बुलंद की है। तकरीबन हर मसलक के मुस्लिम उलमा ने पूरे मुल्क में दहशतगर्दी के खिलाफ आन्दोलन का एलान किया है। इस दहशतगर्दी में सरकारी दहशतगर्दी भी शामिल है। दहशतगर्दी के नाम पर मुसलमानों को बदनाम करने की पुलिस की साजिश पर भी सख्त एतराज किया गया है। उलमा ने एक आवाज में कहा कि हम हर किस्म की दहशतगर्दी का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं।

बशर्ते कि सरकारी एजेन्सियां भी मुसलमानों को ही दहशतगर्द बताकर उन्हें बदनाम करने की घिनौनी साजिश बन्द करें।

उलमा ने साफ कहा कि नक्सलवाद और माओवाद के नाम पर जो लोग सरकारी असलहाखाने लूट रहे हैं, पुलिस थानों पर हमले करके सैकड़ों पुलिस वालों को मौत के घाट उतार रहे हैं। बोडों आन्दोलन नाम पर कत्लेआम और गरीब दलित आदिवासी ख्वातीन व लड़कियों की सरेआम इज्जत लूटी जा रही है। मुल्क के सौ अजला (जनपद) ऐसे हैं जहां से यह तंजीमें (संगठन) सरकार के खिलाफ बगावती तेवरों का मजाहिरा कर रही है। उन जिलों में पुलिस लोग भी आजादी से नहीं निकल पा रहे हैं। उनके खिलाफ तो सरकार और सरकारी एजेन्सियां न तो कुछ कर पा रही हैं और न ही उन्हें मुल्क दुश्मन दहशतगर्द करार देता है उसे बदनाम करता है तो ऐसे पुलिस वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। तकरीबन दस हजार के मजमे में उलेमा ने कहा कि दहशतगर्दी किसी भी वाकये के फौरन बाद पुलिस और खुफिया एजेन्सिंया किसी न किसी मुसलमान को पकड़कर उस पर दहशतगर्दी का लेविल चस्पा कर देती है बाद में सबूत न होने की वजह से वह मुसलमान अदालत से छूट जाते हैं ऐसा करने वाले पुलिस वालों को भी जेल भेजा जाना चाहिए।

उलेमा का कहना था कि मुल्क में जब भी कहीं कोई दहशतगर्दाना कार्रवाई होती है पुलिस का निशाना और इल्जाम सीधे मुसलमानों पर लगता है। आर.एस.एस. हामी फिरकापरस्त ताकतें मदरसों को दहशतगर्दों की फैक्ट्री बताती रही है और मुल्क की तमाम रियासतों की पुलिस का रवैया भी उसी प्रोपगण्डे को सच मान कर अमल करने जैसा होता है। दहशतगर्दी से तअल्लुक रखने के तमाम इल्जामात को हमेशा हमेशा के लिए दफन करने के मकसद से भारतीय इस्लामिक मदरसा एसोसिएशन के जेरे एहतेमाम मशहूर इस्लामी तालीम के इदारे देवबन्द वाके दारूल उलूम में एक दहशतगर्दी मुखालिफ सेमिनार हुआ। जिसमें तकरीबन दस हजार से ज्यादा लोगों ने शिरकत की। सेमिनार में कश्मीर से कन्याकुमारी तक के तकरीबन दो सौ से ज्यादा उलमा और कई मुस्लिम तंजीमों के जिमम्मेदारान ने शिरकत करके एक आवाज से न सिर्फ दहशतगर्दी की मुखालिफत की बल्कि दहशतगर्दी के वाक्यात को इस्लामी दहशतगर्दी का नाम देने वाले मुल्क अमरीका की भी सख्त लफजों में मजम्मत की। इन उलेमा ने हुकूमत को भी साफ तौर से वार्निंग देते हुए कहा कि महज शक की बुनियाद पर बेकुसूर मुसलमानों को निशाना न बनाया जाए। इस सेमिनार में जमात–ए–इस्लामी, अहले हदीस, जमीयत उलेमा–ए–हिन्द, फिरंगी महली, आल इंडिया मिल्ली काउंसिल, जामिया सलफिया और आल इण्डिया तंजीम उलेमा–ए–हिन्द समेत मुख्तलिफ मसलकों और तंजीमों के उलेमा ने इसमें हिस्सा लिया। दहशतगर्दी की हर कार्रवाई को गैर इस्लामी करार देते हुए तमाम उलेमा ने कहा कि दहशतगर्दी का इस्लाम से कोई ताअल्लुक नहीं है। मदरसों में अम्न की तालीम दी जाती है। यह कोई किला या छावनी नहीं है जहां जाना दुश्वार काम हो जो जब चाहे इसे आकर देख सकता है। इन उलेमा ने कहा कि बेकुसूर को निशाना बनाना ही सबसे बड़ी दहशतगर्दी है। इस मोके पर इस्लाम मदरसे बेनकाब नाम की किताब का जिक्र करते हुए आरएसएस पर भी

निशाना साधा गया और कहा गया कि महात्मा गांधी का कत्ल करने वाला नाथूराम गोड्से पहला दहशतगर्द था। उलेमा का कहना था कि बेकुसूर मुसलमानों को दहशतगर्द बताकर जेल भेजने और अजीयत पहुंचाने वाले अफसरों को सख्त सजा दी जानी चाहिए। अमरीका की जबरदस्त मजम्मत करते हुए कहा गया कि साजिश के तहत अमरीका जैसे मुल्क दहशतगर्दी को इस्लामी जेहाद का नाम दे रहे हैं और हिन्दुस्तान की फिरकापरस्त ताकते उसे ऐसा करने का मौका फराहम कर रही है।

दारूल उलूम देवबन्द के मोहतमिम और कांफ्रेंस के सदर मौलाना मरगूबउर्रहमान ने कहा कि इस कान्फ्रेंस की जरूरत इसलिए पड़ी कि जब मुसलमानों को दहशतगर्द और उनके मदरसों को उसकी फैक्ट्री बताया जाता है तो ऐस में मुसलमानों की निगाहें कयादत के लिए मदरसों की तरफ ही उठती है। इस फर्जी प्रोपगण्डे की वजह से गैर मुस्लिम समाज में भी मदरसों के लिए नफरत का जज्बा परवान चढ़ रहा है। इसलिए इस्लामी मदारिस को दहशतगर्दी के मुद्दे पर अपना किरदार साफ तौर पर अदा करना होगा। उन्होंने कहा कि बगैर सोचे समझे बेकुसूर मुसलमानों को गिरफतार किए जाने की वजह से असली मुजरिम बच निकलता है। इस मौके पर पास हुई करारदाद को पढ़ते हुए नायब मोहतमिम देवबन्द मौलाना अब्दुल खालिक मद्रासी ने कहा कि खुफिया एजेंसियों के जरिये मदरसों को दहशतगर्दों की नर्सरी बताने के इल्जामात को दारूल उलूम बहुत संजीदगी से लेता है। उन्होंने कहा कि मदरसे किसी स्टूडेंट को कत्ल करने की तालीम नहीं देते। करारदाद में कहा गया कि जो लोग दहशतगर्दी फैला रहे है, थाने पर हमला कर रहे हैं, पुलिस वालों का कत्ल कर रहे हैं, हथियारों की स्मगलिंग कर रहे हैं सरकार ऐसे लोगों को रोकने के लिए कोई असरदार कदम क्यों नहीं उठाती है। इसमें यह भी कहा गया कि दुनिया में कभी भी बेकुसूर को निशाना बनाने वाली कार्रवाई चाहे कोई शख्स करे, कोई तंजीम या हुकूमत करे, इस्लाम के मुताबिक वह दहशतगर्दाना कार्रवाई है। साथ ही यह भी कहा गया कि दहशतगर्दाना कार्रवाईयों को मीडिया इस्लामी दहशतगर्दी या इस्लाम जेहाद जैसे लफ्ज न लिखे। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि दहशतगर्दी की खबर बनाते या दिखाते वक्त वह उसे इस्लामी दहशतगर्दी का रंग मीडिया नहीं देगा। ऐसे सेमिनार हर सूबे में कराने का भी फैसला इस कान्फ्रन्स में लिया गया।

अपनी सदारती तकरीर में मौलाना मरगूबुर्रहमान ने मुल्क के छः हजार मदारिस के आए नुमाइंदों से अपील की कि दहशतगर्दी के खिलाफ जंग में वह अपना किरदार समझे। जमीयत उलेमा–ए–हिन्द के कौमी जनरल सेक्रेटेरी व आरएलडी के मेम्बर पार्लियामेंट मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि दहशगतगर्दाना वाक्यात में बेकसूर लोगों के मारे जाने और फिर बेकुसूरों को ही पकड़े जाने की दोहरी तकलीफ उन्हें है। जबकि जमीयत के सदर मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि इस्लाम को बदनाम करने की साजिश चल रही है। जमाते इस्लामी के कौमी सदर जलालुद्दीन उमरी ने कहा कि सिर्फ शक की बुनियाद पर मुसलमानों की गिरफतारी नहीं होनी चाहिए। लखनऊ ईदगाह के नायब इमाम मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने कहा कि दीनी मदारिस में अम्न, आश्ती, प्यार–मोहब्बत, और भाईचारे की तालीम दी जाती है, दहशतगर्दी की नहीं।

बरेलवी नजरियात के आलिम मौलाना रहमतुल्लाह असरी ने कहा कि मदरेस दहशतगर्दों की पनाहगाह नहीं बल्कि उनके रास्ते की सबसे बड़ी रूकावट है। नदवतुल उलमा लखनऊ के मौलाना मोहम्मद सलमान नदवी ने आए हुए तमाम उलेमा से अपील की कि वह सब मुत्तहिद होकर दहशतगर्दी का मुकाबला करें। अहले हदीस जमीयत के कौमी सदर व इमाम मेंहदी सल्फी मौलाना असगर अली ने दारूल उलूम की इस पहल की तारीफ करते हुए कहा कि यह कदम बहुत पहले उठना चाहिए था। उन्होंने जार्ज बुश को दुनिया का सबसे बड़ा दहशतगर्द बताया। इसके अलावा आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के सदर राबे हसनी नदवी, अजमेर शरीफ की दरगाह के सज्जादा नशीन सैयद सरवर चिश्ती, दिल्ली की फतेहपुरी मस्जिद के इमाम मुफ्ती मुकर्रम अहमद वगैरह के पैगामात भी पढ़कर सुनाए गए। नगर पालिका देवबन्द के सदर हसीब सिद्दीकी ने तमाम हाजिरीन का खैर मकदम किया। सेमिनार की सदारत दारूल उलूम के मोहतमिम मौलाना मरगूबुर्रहमान ने की। जबकि निजामत के फरायज मौलाना सलमान और मौलाना शौकत बस्तवी ने मुश्तरका तौर पर अंजाम दिए। सेमिनार में मौलाना सालिम कासमी,

सैयद सज्जाद नोमानी और मौलाना अलीम फारूकी ने भी अपने ख्यालात का इजहार किया।

इस कांफ्रेंस में मंजूरशुदा तजावीज में कहा गया कि इस्लाम सारी इंसानियत के लिए दीन रहमत है। वह दायमी अमन वसलामती और लाजवाल सुकून व इत्मीनान का सरचश्मा है। इसने पूरी इंसानी बिरादरी को बिला तफरीक कौम और मजहब इतनी अहमियत दी है। कि एक शख्स के कत्ल को पूरी इंसानियत का कत्ल करार दिया है। इसका दामने रहमत सारे आलमे इंसानियत को मुहीत है। इस्लाम ने तमाम इंसानों के साथ मेलजोल बराबरी, रहमोकरम, हमदर्दी व रवादारी, खिदमत व खैरख्वाही, अदल व इंसाफ और पुर अम्न की तालीम दी है। इस्लाम हर किस्म के तशद्दुद और दहशतगर्दी का शदीद मुखालिफ है। इसने जुल्म जोर जबरदस्ती, फितना व फसाद, कत्ल व खूंरेजी, बदअम्नी व शरअंगेजी को सख्त गुनाह और भयानक जुर्म करार दिया है।

राब्ते मदारिसे इस्लामिया दारूल उलूम देवबन्द के जेरे एहतमाम मुनअकिद होने वाली मिल्लत के तमाम मकातिबे फिक्र के नुमाइंदो की यह दहशतगर्दी मुखालिफ कुल हिन्द कांफ्रेंस हर किस्म के तशद्दुद और दहशतपसंदी की सख्त लफजों में मजम्मत करती है और इस अलमनाक आलमी और मुल्की सूरतेहाल पर गहरी फिक्र व तशवीश और गम व गुस्से का इजहार करती है कि दुनिया की अक्सर हुकूमतें पच्छिम की जालिम व जाबिर और साम्राजी हुकूमतों के नक्शे कदम पर चलते हुए और उनको राजी रखने के वाहिद मकसद से अपने शहरियों खुसूसन मुसलमानों के साथ ऐसा रवैया अपनाती जा रही है जिसे किसी भी दलील से जायज नहीं ठहराया जा सकता। हमारे लिए यह बात और ज्यादा बाइसे तशवीश है कि हमारे मुल्क की दाखिला और खारिजा पालीसी भी इन ताकतों के जेरे असर आती जा रही है जिनके जुल्म व बरबरियत और सरकारी दहशतगर्दी ने न सिर्फ फिलिस्तीन, इराक व अफगानिस्तान बल्कि बोसनिया और साउथ अमरीका के कई मुल्कों में भी मालूम इंसानी तारीख के सारे रिकार्ड तोड दिये। जबकि हमारा यह अजीम मुल्क गैर जानिबदारी बल्कि अख्लाकी व रूहानी कद्रों के हवाले से दुनिया में जाना जाता रहा है और अब तो बात यहां तक पहुंच चुकी है कि हिन्दुस्तानी मुसलमान खासकर दीनी मदरसे से ताल्लुक रखने वाला हर शख्स जो जरायम से दूर और पाक साफ जिन्दगी के सिलसिले में मिसाली रिकार्ड रखता है हर वक्त इस दहशत में मुब्तला रहता है कि इंतेजामिया के हाथ उसके गिरेबान तक कब पहुंच जाएं और न जाने कितने लोग आज जेलों में बन्द, नाहक तरह–तरह की अजीयतें बर्दाश्त करने पर मजबूर है। जबकि अस्ल में दहशतगर्दी फैलाने वाले, थानो को लूटने वाले, सरेआम, पुलिस अफसरान को कत्ल करने वाले, आतिशी असलहों की नुमाइश करने वाले अनासिर आजाद घूम रहे हैं और उनके इस किरदार पर सवालिया निशान लगा दिया है जो बिला शुब्हा मुल्क व कौम के लिए इन्तिहाई खतरनाक बात है, इस लिये यह कुल मस्लकी दहशतगर्दी मुखालिफ कान्फ्रेंस इस रवैये की पुरजोर मजम्मत करती है और सरकारी अहलकारों की इस जानिबदारी पर इंतिहाई तशवीश का इजहार करती हैं और यह एलान करती है कि मुल्क में कानून व इंसाफ और सेक्युलर निजाम की बालादस्ती बाकी रहने के लिए मुत्तहिदा जद्दोजहद जारी रखेगी।

यह काफ्रेंस भारत सरकार से पुरजोर मुतालबा करती है कि इस्लामी मदरसों और मुसलमानों की किरदारकुशी करने वालों को लगाम दी जाए और इंतजामी मशीनरी को पाबंद किया जाए कि मुल्क के अम्न व अमान को तबाह करने वाले किसी भी वाक्ये के पेश आने पर गैर जानिबदारी के साथ तहकीकात की जाए और जुल्म साबित होने पर मुजरिम को करार वाकई सजा दी जाए और किसी खास फिरके के लोगों पर बगैर किसी ठोस बुनियाद के शक व शुब्हे का इजहार न किया जाए। गरज कि सरकारी एजेंसिया हर किस्म के भेदभाव से ऊपर उठकर अपना फर्ज़ मंसबी अदा करें ताकि मुल्क में हकीकी अम्न व सलामती बरकरार रहे। यह दहशतगर्दी मुखालिफ कुल हिन्द कांफ्रेंस अपने प्यारे मुल्क के तमाम दानिश्वरों, अहले कलम और मीडिया के जिम्मेदारों से अपील करती है कि यह मुल्की और इंटरनेशनल मसायल का आजादाना व दयानतदाराना तजकिया करें और किसी खास भेदभाव का शिकार होकर मसायल को एक खास रंग देने की कोशिश से बचें। इसी के साथ तमाम इस्लामी मकातिबे फिक्र के नुमाइंदों की यह दहशतगर्दी मुखालिफ कुल हिन्द काफ्रेंस तमाम मुसलमानों से अपील करती है कि वह

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

रूस में इस्लाम का मैदान

अब्दुल हकीम

रूस के क्षेत्रीय विकास मंत्री विलादिरमीर याकोलीव ने एक बयान में कहा कि "रूस की आबादी घट रही है गत वर्ष सन् २००४ ई० में १.७ मिलियन आबादी कम हो गयी है।" यह बयान उन्होंने २० अप्रैल २००५ ई० को मास्को में आयोजित एक सरकारी आयोजन में कही थी। रूस में आबादी कम होने का यह सिलसिला १९९२ ई० से शुरू हुआ है। उस समय वहां की आबादी एक अरब ४८.३ करोड़ थी। २००३ में यह घटकर एक अरब ४४.५ करोड़ हो गयी। २००४ में यह घटकर एक अरब ४२९८ करोड़ हो गयी। यानी पिछले दस वर्षों में रूस में ६० लाख आबादी कम हो चुकी है। इसमें ३.५ मिलियन आबादी १६ वर्ष से कम आयु के लोग हैं और १.१ मिलियन से ज्यादा औरतें ऐसी हैं जो शादी की उम्र को पहुंच चुकी है।

अलबत्ता ५.५ मिलियन लोग उन देशों से वापस आये जो कभी सोवियत संघ के अधीन रह चुके थे, जिनके कारण आबादी का अनुपात कुछ बहाल हुआ है।

आबादी में इस ज़बरदस्त कमी का नतीजा यह भी सामने आया है कि ११ हजार गांव रूस के नक्शे से मिट चुके हैं। २००४ की समाप्ति पर मास्को में आयोजित होने वाले एक राष्ट्रीय सम्मेलन में इस पर विचार–विमर्श हुआ। उसी सम्मेलन में यह बात भी सामने आयी कि १३ हजार गांव भौगोलिक दृष्टि से मौजूद तो हैं लेकिन गैर–आबाद हैं। डेमोग्राफिक्स इस जबरदस्त कमी के कई कारण गिनाते हैं जो निम्नलिखत है :

रूस के मुकाबले अन्य देशों में जनसंख्या वृद्धि की दर १७ प्रति हजार है जबकि रूस में यह दर केवल १० प्रति हजार है। आंकड़े बताते हैं शादी योग्य महिलाओं का औसत १.१७ प्रतिशत है। जबकि जनसंख्या वृद्धि की मौजूदा दर बनाये रखने के लिए इसे कम से कम २.१५ प्रतिशत होना चाहिए। मृत्यु दर १६ प्रति हजार है। जिसका अर्थ यह हुआ कि यदि परिस्थिति यही रही तो आगामी चालीस–पचास वर्षों में रूस की आबादी संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार १०० मिलियन और रूसी स्रोतों के अनुसार ६५ मिलियन हो जाएगी।

रूस की आबादी कम होने की सबसे बड़ी वजह गर्भपात कराने का बढ़ता रूझान है। प्रतिवर्ष लगभग २ मिलियन महिलाएं गर्भपात कराती हैं। इस आंकड़े में वे महिलाएं शामिल नहीं है जो विशेष अस्पतालों और डिस्पेंसिरियों में गर्भपात कराती हैं।

सोवियत संघ के पतन के बाद १९९८ में गर्भपात की यह घटनाएं स्रोतो की कमी के कारण ४.६ मिलियन कम हो गये। रूस के मेडिकल स्रोतों के अनुसार ६० प्रतिशत घटनाएं आपसी सहमति से होती है। इनमें केवल १० प्रतिशत महिलाएं ऐसी होती हैं जो स्वास्थ्य कारणों से गर्भपात कराती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि केवल ४० प्रतिशत महिलाएं अपने बच्चों को जन्म दे पाती हैं। २० प्रतिशत घटनाएं उन बच्चियों के मुताल्लिक हैं जिनकी आयु १८ वर्ष से कम होती हैं।

प्रतिवर्ष मरने वाली महिलाओं में २५ प्रतिशत महिलाएं केवल गर्भपात के कारण मौत का शिकार बन जाती हैं और २० प्रतिशत महिलाएं हमेशा के लिए बांझ हो जाती हैं।

गर्भ धारण करने योग्य महिलाओं (१५ वर्ष से ४९ वर्ष) की संख्या ३९ मिलयन है जिनमें ७ मिलियन महिलाएं बांझपन का शिकार है। इस बात की भी संभावना है कि उनकी संख्या और अधिक हो क्योंकि ये आंकड़े वे हैं जो रिकार्ड में मौजूद हैं।

आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि १९८९ से २००२ तक के बीच ५.४ मिलियन रूसी वहां से पलायन कर चुके हैं। पलायन करने वालों में एक लाख से अधिक स्कॉलर्स शामिल हैं।

तम्बाकू के इस्तेमाल के नतीजे में ५ लाख लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। इन में मर्दों का अनुपात ६५ प्रतिशत है। हर तीन में से एक महिला तम्बाकू का शिकार हो रही है।

१६ वर्ष से कम आयु के २० प्रतिशत बच्चे और १६ प्रतिशत बच्चियां तम्बाकू का धड़ल्ले से इस्तेमाल करती हैं।

रूस में ऐसे भी अनेक कारण हैं जिनकी वजह से वहां की महिलाएं बच्चा पैदा करना नहीं चाहतीं। ७५ प्रतिशत बिवाह तलाक के कारण खत्म

हो जाता है। ४० प्रतिशत लोगों को भरपेट खाना नसीब नहीं होता। २६ प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है।

फिर जो बच्चे पैदा होते हैं उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार २.५ मिलियन लावारिस बच्चे हैं जिनकी पढ़ाई लिखायी का सिलसिला बीच में ही टूट चुका है। ७ लाख बच्चे यतीमखानों में रहते हैं। ३० प्रतिशत बच्चे नाजायज तरीके से पैदा हो रहे हैं और प्रत्येक वर्ष इनमें बढ़ोत्तरी हो रही है।

रूस में विकलांगों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ३.८ मिलियन लोग तो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बीमार हैं। ५ लाख लोगों को पागलपन का दौरा पड़ता है। उतने ही लोग अंधे हैं। रूस की लगभग आधी आबादी आंख की अन्य बीमारियों से दोचार हैं।

वहां ऐसे नवयुवकों की सख्त कमी है जो सेना में भर्ती हो सकें। सेना की भर्ती में आवेदन करने वाले नवयुवकों की मेडिकल जांच से पता चलता है कि ८४ प्रतिशत आवेदनकर्ता सेहत के लिहाज से अयोग्य हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार वहां काम करने योग्य पुरुषों में से अधिकांश या तो बेकार व बेरोजगार हैं, या जेल में हैं या नशा के आदी हैं।

वहां की आबादी में आने वाली कमी की सबसे बड़ी वजह वहां से लोगों का लगातार पलायन है। इसकी अनेक वजहें गिनायी जाती हैं।

वहां के नागरिकों को सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक आशंकाओं का सामना है। अब अर्थोडॉक्स चर्च ने इस सिलसिले में कुछ हल निकालने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने जनसभाओं, मीटिंगों और कांफ्रेंसों के जरिया महिलाओं से यह आह्वान किया है कि वे बड़ी संख्या में बच्चे पैदा करें, लेकिन उसकी ये कोशिशें बेसूद साबित हो रही हैं।

इसकी एक वजह तो यह है कि अर्थोडॉक्स ईसाइयों की तादाद कम है। फिर आबादी में गिरावट का अनुपात भी उन्हीं के समुदाय में सबसे अधिक है। दूसरी ओर मुसलमानों की आबादी में बढ़ोतरी हो रही है, इसलिए भी चर्च सक्रिय हो उठा है।

चर्च के सक्रिय होने की एक वजह यह भी बतायी जा रही है कि लोग बड़ी संख्या में इस्लाम कबूल कर रहे हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो जिस दिन कोई रूसी मर्द या औरत इस्लाम कबूल न करते हैं।

ऐसा महसूस होता है कि रूस का भविष्य तारीक है और उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आ रही है और लोग यह मानने लगे हैं कि उनका भी वही अंजाम होने वाला है जो सोवियत संघ का हुआ था।

इस तारीकी में बस एक ही रोशनी नजर आ रही है और लोग यह मानने लगे हैं कि रूस में इस्लाम की रोशनी फैल रही है और अल्लाह ने चाहा तो इस्लाम रूस को इन कठिनाइयों और खतरों से निकाल लेगा।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

को नष्ट करता है। मधुमेह (सुगर) को समाप्त कर देता है। भूख बढ़ाता है। इसके पीने से जलन्धर की बीमारी ठीक हो जाती है। तेजाबीयित समाप्त करता है। यही कारण है कि कमजोर और बीमार हाजी हज की अदाएगी के बाद घरों को लौटते हैं तो अधिक स्वस्थ नजर आते हैं।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ३० का शेष)

अपनी अब तक कि रविश के मुताबिक आइंदा भी अपना वतन दोस्ताना और इंसानियत के एहतराम पर मबनी अपना किरदार नुमायां रखें, हालात की संगीनी का भरपूर हल ढूंढे। मुकम्मल बेदार मग्जी का सुबूत दें ताकि उनमें से किसी को भी इस्लाम मुखालिफ या मुल्क दुश्मन ताकतें अपना हथियार न बना सकें। अपने मुल्क से वफादारी बरकरार रखते हुए इज्जत व सरबुलंदी के साथ रहे अपनी कियादत पर भरपूर एतमाद रखें इस्लामी मदरसों को अपनी पूंजी समझते हुए हर हाल में उनका साथ दें और पूरी हिम्मत और अज्म व हौसले के साथ शरीअत व कानून की मुखालिफत से बचते हुए मुल्क में जिन्दगी गुजारें और याद रखें कि अस्ल मसला हमारे ईमान और आमाल का है इसलिए नेक आमाल से आबाद जिन्दगी गुजारने की तरफ सबसे ज्यादा ध्यान दें क्योंकि हालात के बनने बिगड़ने का अस्ल तअल्लुक आमाल के बनने बिगड़ने से है।

सय्यिदना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) की किताब ग़ुन्यतुत्तालिबीन का उर्दू तर्जमा बाज़ार में मौजूद है उसे ज़रूर पढ़ें।

कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए केवल कानून बनाने की नहीं
जनजागरूकता लाने की ज़रूरत है

विद्या प्रकाश

देश के हर छोटे–बड़े शहर और कस्बे में अल्ट्रासाउंड सेन्टर की आड़ में गर्भस्थ भ्रूण के लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण की हत्या वैधानिक प्रतिबन्ध के बावजूद आजकल सामान्य–सी बात हो गयी है। हालांकि इसकी रोकथाम के लिए अनेक नियम कानून निर्मित हैं। मगर इनका क्रियान्वयन न हो पाने और दोषी जन को दंड न मिल पाने की वजह से सारा नियम–कानून धरा का धरा रह जाता है। तमाम कायदे–कानूनों का खुल्लम–खुल्ला उल्लंघन करते हुए भ्रूण के लिंग परीक्षण तथा कन्या भ्रूण हत्या का यह खूनी खेल सालों से खेला जा रहा है।

छोटे शहरों में आमतौर पर अल्ट्रासाउंड सेन्टरों में भ्रूण के लिंग परीक्षण की फीस लगभग १००० रूपये के आसपास तथा चिकित्सा द्वारा कन्य भ्रूण के गर्भपात के फीस गर्भ के अनुसार लगभग छह–सात सौ रूपये होती है। बाहर बोर्ड अल्ट्रासाउंड सेंटर का लगा होता है और अन्दर काम भ्रूण लिंग परीक्षण का होता है। यह स्थिति समाजशास्त्रीय दृष्टि से तो खतरनाक है ही, इससे कन्या भ्रूण हत्या को अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही यह नैतिक दृष्टि से भी अनुचित है।

जिस महिला की कोख में गर्भ पल रहा है, उसे भी विधिक नियमानुसार दंड देने का स्पष्ट प्रावधान है। यदि वह स्वयं ही अपने गर्भ में पलने वाले भ्रूण को नष्ट करती है तो भारतीय दंड की धारा ३१५ में इसे दंडित करने का प्रविधान उपलब्ध है। यदि वह इस आशय से कोई कार्य करती है, जिससे पृथ्वी पर जन्म लेने से पूर्व ही भ्रूण की हत्या हो जाए। हालांकि चिकित्सकीय गर्भ समापन अधिनियम १९७९ के अन्तर्गत कतिपय विशिष्ट अनिवार्य परिस्थितियों में गर्भस्थ भ्रूण को नष्ट करने के कार्यों को वैधता अवश्य प्रदान की गयी है परन्तु यह स्थिति दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस संबंध में निर्धारित परिस्थितियों और शर्तों की अनदेखी और उपेक्षा कर चिकित्सकों ने कन्या भ्रूण हत्या का अनैतिक आपराधिक कृत्य अर्थ लोभ में आरंभ कर दिया।

अल्ट्रासाउंड मशीन से भ्रूण का लिंग परीक्षण कर उसे समाप्त कर डालना आजकल सामान्य बात हो गयी है।

प्रसव पूर्व नैदानिक तकनीक अधिनियम १९९४ तक जनवरी सन १९९६ को लागू हुआ। जिसके अन्तर्गत लिंग परीक्षण को कानूनन प्रतिबंधित कर दिया गया है और इसके उल्लंघनकर्ताओं के लिए तीन से पांच वर्ष तक के कारावास और ३०–५० हजार रूपये तक के जुर्माने की व्यवस्था की गयी है। इसी अधिनियम की धारा ३ के अन्तर्गत इस बात का भी प्रावधान है कि कोई भी रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिशनर अथवा व्यक्ति केवल इस कानून में पंजीकृत स्थान पर इस प्रकार के कार्य का संचालन नहीं कर सकता और यदि वह ऐसा करता है तो वह कानूनन जुर्म है। धारा ४ के अन्तर्गत जन्म पूर्व निदान क्लीनिक का प्रयोग केवल निम्नलिखित परिस्थितियों में ही किया जा सकता है– क्रोमाजोम से संबंधित असामान्यता, जेनेटिक मेटाबोलिक रोग, हीमोग्लोबिनोपैकीन, लिंग संबंधी जैवकीय बीमारी तथा अजान्मिक असामान्यताएं।

इसी क्रम में २६ जनवरी २००२ ई० को उच्चतम न्यायालय ने कन्या भ्रूण हत्याओं की रोकथाम की प्रतिबद्धता और संकल्पबद्धता के साथ सभी राज्यों को यह आदेशित–निर्देशित किया था कि उन सभी अल्ट्रासाउंड मशीनों को जब्त कर सील कर दिया जाए जिनके लिए लाइसेंस नहीं प्राप्त किया गया है तथा जिनका प्रयोग भ्रूण के परीक्षण हेतु किया जा रहा है। चिकित्सा द्वारा कानून छूट व रियायत को ढाल बनाकर इस्तेमाल करने से भ्रूण परीक्षण संबंधी विधि–विधान की अनदेखी की जा रही है। गर्भपात संबंधी कानून के अन्तर्गत मानसिक आघात के आधार पर चिकित्सकों को किसी महिला को गर्भपात की सलाह देने तथा उसके गर्भस्थ भ्रूण को नष्ट कर देने की छूट हासिल है। इसके आगे कानून बेबस हो जाता है।

भ्रूण हत्या के मामले में विधिक

(शेष पृष्ठ १८ पर)

बवासीर (Piles)

एवं होम्योपैथिक उपचार

डा० एस०एम०आरिफीन

बवासीर का अर्थ :

गुदा के अन्त में जो शिराएं हैं उनमें सूजन को ही बवासीर कहते हैं। **(Enlarged, Painful Veins in the rectum or around the anus)** यह सूजन गुदा के अन्दर और बाहर हो सकती है। अन्दर की सूजन या मस्सा को अंग्रेजी में इन्टरनल पाइल्स कहते हैं और बाहर की सूजन को इक्सटरनर पाइलस कहते हैं।

बवासीर मुख्यतः दो प्रकार की होती है। खूनी और बादी अन्दर से मस्सों से जब रक्त निकलता है तो इसे खूनी बवासीर **(Bleeding Piles)** कहते हैं। बाहर के बवासीर के मस्से दर्द करते हैं। मगर उनसे खून नहीं निकलता तो इसे बादी बवासीर **Blind** या **Dry Piles** कहते हैं। शिरा का फूल जाना ही मस्सा कहते हैं। कभी–कभी शिराएं खजूर, अंगूर के गुच्चे की तरह हो जाती हैं। बादी बवासीर बहुत कष्ट देती है। शल्य क्रिया **(Surgery)** द्वारा इसको निकाल देना इसका सही इलाह नहीं है यह पुनः शरीर तल पर किसी न किसी रूप में उभर कर तंग कर सकती है। अगर सही समय सही लक्षण की पकड़ और उचित पोटेंसी के ज्ञान से बवासीर का इलाज जड़ से होम्योपैथिक दवा द्वारा किया जाए तो इसका जड़ से जाना सम्भव है।

खूनी बवासीर – (Bleeding Piles) होम्यो दवा के द्वारा इलाज काला खून, दर्द नहीं दुःखन **(Soreness)** होती है अगर खून अधिक मात्रा में आ रहा है और गुदा में टपकन सी महसूस होती है तो **Hamamelis 200** हफते में एक बार तीन महीन तक लें।

खूनी बवासीर की सर्वोत्तम दवा **Dolichos Mucuau** – दस बूंद १/४ कप पानी में दिन में तीन बार एक महीने तक लें। चमकीले खून को रोकने के लिए सर्वप्रथ सर्वश्रेष्ठ दवा **Ficuls Religiosn** (दस – दस) बूंद १/४ कप पानी में दिन में तीन बार लेने से आराम मिलता है।

हर बार पाखाना होने के बाद खून की पिचकारी सी छूटती है। **Phosporus 30** दिन में तीन बार लें।

बादी बवासीर

Aesculus Hip 200 हफते में एक बार ले जब ऐसा महसूस हो कि मानो गुदा में छोटे–छोटे तिनके घुसे हैं, कभी कभी खून भी आ सकता है, गुदा में जलन, दर्द शिराओं में भी ऐसा महसूस होता है कि तिनके **Collinsonia** ठूसे हैं परन्तु **Collinsonia** से सख्त कब्ज रहता है।

हर बार पाखाना जाने से मस्सा बाहर हो जाता है, कमर में दर्द, गुदा पर बोझ हमेशा कुछ बाहर निकलने को जोर मारता है **Rhus Tox** ३० मस्सा नीले नंग का स्पश असहिष्णुता, गर्म पानी से धोने से आराम **Muriaticum Acid - 30**

गुदा पर दबाव, बोझ बैठने, खड़ा रहने पर दर्द, चलने फिरने से दर्द कम, पाखाना में जोर लगाने पर कांच निकलना।

गुदा में जलन – **Ignatia 200** हफते में एक बार कब्ज की शिकायत रहने पर **Nux-Vomica 30** दिन में चार बार

मस्सों से गीला स्राव निकलना

गुदा में भारीपन, खुजली, ठंडा पानी से आराम, बाहर मस्से अंगूर की तरह **Aloes 30** दिन में तीन बार।

गुदा अशक्त, गुदा से स्राव, मानो गुदा में डाट लगा दिया है। गुदा के सूखापन से खून जाना **Anacardium 30** दिन में तीन बार।

मस्से बाहर की ओर, रंग नीला, सूजन स्राव रिसा करना, एवं जलन ऐसे लक्षणें में **Cabo-Veg 30** दिन में तीन बार ले।

बवासीर में कुछ अन्य लक्षण यदि रहें तो निम्न अनुसार दवा लें।

१. जलन चुभन, चुभी हुई सूई निकाली जा रही हो और गर्म सेक से आराम मिलता है तो **Arsenic 30** का सेवन लाभाकारी है।

२. गुदा में कांच के टुकडे भरे पड़े हैं, शौच करते वक्त दर्द, जलन मस्से बाहर आ जाना तो **Rataniha 200** हफते में एक बार लें। दिन में तीन बार।

३. मिस्वाई जैसी लहर, गुदा प्रदेश में काला खून, आंव सूतदार पाखाना करते वक्त मरोड़, ऐंठन बना रहना, यह लक्षण खूनी एवं बादी दानों में ऐसे हो सकता है। पाखाना में आंव भी आ सकता है। ऐसे में **Capsicum-6** का सेवन दिन में चार बार करें।

किस्त दो

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अज़कार	जाप	इस्तिह़कार	घृणा	एअ़तिदाल	बीच का
अज़ल्ल	अत्यन्त तुच्छ	इस्तिह़क़ाक़	अधिकार	एअ़तिराज़	आपत्ति
इज़्न	अनुमति	इस्तिह़काम	दृढ़ता	एअ़तिराफ़	मान लेना
अज़हान	बुद्धि (बहुवचन)	इस्तिजार	किराए पर लेना	एअ़तिक़ाद	विश्वास
अज़ीयत	कष्ट	इस्तिदलाल	तर्क लाना	एअ़जाज़	चमत्कार
अराकीन	सदस्य गण	इस्तिफ़सार	पूछना	एअ़ज़ाज़	सम्मान
इरतिबात	मेल मिलाप	इस्तिस्क़ा	पानी मांगना	अअ़साब	नसें
इरतिजाल	जल्दी करना	इस्तिशहाद	गवाही चाहना	अअ़ज़ाअ	अंग बहुवचन
इरतिआ़श	कांपना	इस्तिस्वाब	राय लेना	अअ़ज़म	सब से बड़ा
इरतिफाअ़	ऊंचाई	असरार	भेद (बहुवचन)	अअ़ला	बहुत ऊंचा
इरतिक़ा	उन्नति करना	इस्राफ़	अपव्यय	एअ़लान	घोषणा
इरतिकाज़	जमना	इस्क़ात	गिराना	अअ़माल	कार्य (बहुवचन)
इज़ाला	मिटाना	इशतिराकीयत	सोशलिज़्म	अअ़वान	सहयोगीगण
इज़दिह़ाम	भीड़	इसाबत	ठीक बात कहना	अअ़यान	ऊंचे लोग
इज़दिवाज	विवाह	अस्लीयत	वास्तविकता	इग़माज़	क्षमा, दृष्टि हटा लेना
इज़दियाद	अधिकता	उसूल	नियम, सिद्धान्त	इग़वा	अपहरण
इस्तिब्दाद	अत्याचार	इत्तिलाअ़	सूचना	अग़यार	पराये लोग
इस्तिब्दादीयत	अत्याचार भाव	इतमीनान	ढारस	इफ़ादः	लाभ
इस्तिजाबत	स्वीकृति	इआ़नत	सहयोग	इफ़ाक़:	कष्ट में कमी
इस्तिह़साल	प्राप्ति	एअ़तिबार	भरोसा	उफ़ताद	संकट

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी अब न ज़िल्ली नबी न बुरूज़ी न उम्मती

इदारा

ह़दीस : सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते सौबान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया (बताया) कि मेरी उम्मत में ख़ूब झूठ बोलने वाले पैदा होंगे उनमें से हर एक दअ़वा करेगा कि मैं सन्देष्टा हूं परन्तु मैं अन्तिम सन्देष्टा (नबी) हूं मेरे पश्चात कोई सन्देष्टा (नबी) नहीं। मुस्लिम ही की एक रिवायत में और है कि उस समय तक क़ियामत न आयेगी जब तक तीस के लगभग दज्जाल (ख़ूब झूठ बोलने वाले) न आलें उनमें से हर एक कहेगा कि मैं अल्लाह का रसूल हूं।

ह़दीस : सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि फ़रमाया (बताया) रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कि ऐ लोगो नुबूवत से अब कुछ शेष (बाक़ी) नहीं रहा सिवाय अच्छे स्वप्नों के। (अर्थात आदमी अच्छे अच्छे स्पन तो देखेगा परन्तु अब वही न आयेगी कि नुबूवत समाप्त हो चुकी)

ह़दीस : सुनने तिर्मिज़ी में अ़ुक़्बा बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया (बताया) यदि मेरे पश्चात कोई नबी होतो तो वह अ़ुमर बिन ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) होते। (अर्थात मेरे पश्चात अब कोई नबी न आयेगा)

ह़दीस : सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने ह़ज़रते अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि तुम मेरे साथ ऐसे हो जैसे हारून (अ़लैहिस्सलाम) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ, बस अन्तर यह है कि मेरे पश्चात कोई नबी नहीं। (अर्थात हारून तो नबी भी थे तुम नबी नहीं हो सकते इस लिये कि नुबूवत समाप्त हो चुकी)

ह़दीस : सुनने दारमी में ह़ज़रते जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कि मैं तमाम रसूलों का पेशवा (नेता) हूं और कोई गर्व नहीं, और मैं ख़ातिमुन्नबीयीन (अन्तिम सन्देष्टा) हूं और कोई गर्व नहीं और मैं क़ियामत के दिन पहला शफ़ाअ़त करने वाला और क़बूल होने वाली शफाअ़त वाला हूंगा और कोई गर्व नहीं।

आबे ज़मज़म

हकीम हामिद तहसीन

अल्लाह तआला ने दुन्या की हर जान्दार चीज को पानी से पैदा किया। जीवन का प्रारम्भ पानी से हुआ और दुन्या में सबसे अधिक पाई जाने वाली चीज पानी ही है। इसी पर जिन्दगी निर्भर है। कुदरत का कमाल है कि दुन्या के कुल क्षेत्रफल (रकबे) का तीन चौथाई जल और एक चौथाई थल है जिस पर बसने वाले जान्दार के केवल एक प्रतिशत पानी कम आता है, दो प्रतिशत बर्फ की शकल में और शेष समुद्री पानी की सूरत में मिलता है। आबे जमजम इस एक प्रतिशत पानी का हिस्सा है। जो खान–ए–काबा में हजरे अस्वद (काला पत्थर) की सीध में २०७ फीट गहरे कुंवे से प्राप्त होता है। जमजम इब्रानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "ठहर जा ठहर जा" है। सीरियाई भाषा में इसका अर्थ बिखरी हुई चीज के इकट्ठा करने के है और यह दोनों एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।

हजरत इब्राहीम (अलै०) खुदा के आदेश से हजरत हाजरा और अपने जिगर के टुकड़े इस्माईल (अलै०) को मक्का के सुनसान उजाड़ और बंजर इलाके में छोड़कर चले गये। जब उनके पास खाने पीने का सामान समाप्त हो गया और हजरत इसमाईल के होंठ प्यास से सूख गये तो हजरत हाजरा अपने बेटे की भूख प्यास मिटाने की सअी (कोशिश) में सफा और मरवः पर पानी की तलाश में दौड़ने लगीं। ममता की इस बेचैनी, बेकरारी और अधीरता से अल्लाह तआला की रहमतों (करूणा) के विशाल समुद्र में जोश आया। हजरत हाजरा की सअी पसन्द फरमाई गई। अल्लाह तआला ने जब्रईल (अलै०) को आदेश दिया। उन्होंने अपना पर जमीन पर जहां इस्माईल अलैहिस्सलाम के एड़ियां रगड़ रही थीं मारा वहां से ठंडे और मीठे पानी का एक चश्मा (सोता) उबल पड़ा जिस को मिट्टी और पत्थर आदि से हजरत हाजरा ने ज़मज़म कह कर रोक दिया। जिसे बाद में कुंवे की शक्ल दी गई। उस समय से इस चश्मे का नाम जमजम पड़ा। इस का पानी आबे जमजम कहलाया। हजरत हाजरा ने अपने बेटे की प्यास बुझाई बल्कि आहार की आवश्यकता को भी पूरा किया क्योंकि यही आबे जमजम है जिस ने हजरत अबूजर गिफारी (रजि०) की ४० दिन तक आहार की जरूरत को पूरा किया था और नबी–ए–करीम सल्ल० ने फरमाया कि आबेज़मज़म एक पूरा आहार है।

जब से इस्लाम ने आबे ज़मज़म को महत्व दिया उस की पवित्रता के चार चांद लग गये। रसूल (सल्ल०) का फरमान है कि "जिब्रईल अमीन का कुंवा और अल्लाह तआला की तरफ से हजरत इस्माईल (अलै०) का पियाऊ है। हजरत जाबिर रजि० से रिवायत है कि जमजम का पानी जिस उद्देश्य से पिया जाए लाभप्रद है। आबेज़मज़म खाना भी है पानी भी औ उस का पानी तबयित को बहाल करता है। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) का कथन है आप (सल्ल०) ने सुल्हे हुदैबिया के समय आबे जमजम मंगवा कर पीया और अपने साथ मदीना ले गए। हजरत आएशा (रजि०) और दूसरे सहाब–ए–किराम भी इस सुन्नत पर अमल करते रहते हैं। आप (सल्ल०) ने इसको बड़ी इज्जत और आदर के साथ पीया, फरमाया कि जमजम का पानी जिस उद्देश्य से भी पिया जाए उसके लिए लाभदायक होगा। अगर बीमारी से अच्छा होने के लिए पीया जाये तो अल्लाह तुम्हें स्वस्थ कर देगा। प्यास के लिये पीयोगे तो अल्लाह तसल्ली देगा। रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह भी कथन है इस धरती पर सबसे बेहतरीन लाभदायक और उत्तम पानी जमजम है। हुजूर (सल्ल०) ने इसको हमेशा काबे की तरफ मुंह करके खड़े होकर स्वास्थ, सलामती और ज्ञान में बढ़ोतरी की दुआ के साथ पीया। दुआ तो सहाब–ए–किराम तरगीब (प्रेरणा) के लिए थी अन्यथा आपका ज्ञान तो वही–ए–इलाही है। आपको मालूम था कि यह पानी स्वास्थ और ज्ञान में वृद्धि देता है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की खोज साबित करती है कि आबेजमजम प्यास बुझाने, दिल को प्रफुल्लता (फरहत) और पूर्ण आहार के साथ साथ कैंसर में लाभदायक है। ब्लड प्रेसर समाप्त करता है जस्ता मैग्नीज और गन्धक के कारण जरासीम (कीटाणु)

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

छत्तीसगढ़ के एक क़ादियानी का ख़त और उसका जवाब

एडीटर

खत की नक्ल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुकर्रम डाक्टर हाफिज हारून रशीद सिद्दीकी साहिब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

तहरीर है कि आप के भाई मुकर्रम अब्दलगनी ड्राइवर (अन्डे वाले) से एक किताब "कादियानियत से सावधान" हिन्दी मिली जजाकुमुल्लाह।

हम इस लिये जजाकुमुल्लाह लिखे कि आप अपनी इल्मी काबिलियत व परहेगजारी का सुबूत यह दिया कि इस किताब में कोई न कुर्आनी आयात हैं और न ही हदीसों का सुबूत कि किस हदीस किस बाब, किस सफे से? साबित है।

मुकर्रम भाई गनी साहिब को चन्द कुर्आनी आयात से हम ने कुछ तबादिल–ए–खयालात करना चाहा लेकिन मौसूफ शायद कुर्आन नहीं पढ़तें हों, क्यों कि वह आप की ऐसी भद्दी किताब हमें दिये जिस में शायद कुर्आनी आयात से मजबूत (नऊज बिल्लाह) कोई दलील आप की तहरीर में दिखाई दी हो।

उन तमाम एअतिराजाते बातिला का जवाब मुखतसरन हम आप की खिदमत में भेजवा रहे हैं। खुदा रा गौर से पढ़ें, अगर गुस्से से या नफरत से फाड़ देंगे या वापस लौटाएंगे तो खुदा की पकड़ होगी क्योंकि कुर्आनी अल्फाज को आपने (नऊज बिल्लाह) रद्दी समझा। सिर्फ एक ही सूरत बचती है कि या तो तौबा किया जाए या अहमदयित में दाखिल हो कर नेक अमल खिलाफत के ताबिअ रह कर बजा लाया जाए क्योंकि किसी ने क्या ही अच्छा कहा है –

जो तैरना नहीं जानता उसे समंदर में फलांग नहीं लगाना चाहिए।

जमाअते अहमदिया अल्लाह के फज्ल से कुर्आन–हदीस से उसूलन बात करती है तो यह जमाअत आपकी नजरों में काफिर जमाअत है (नऊज बिल्लाह) लेकिन आप बिगैर कुर्आन की आयात के बात किये अपने आपको आलिम, मुत्तकी, इस्लाम के फिदाई तसव्वुर करते हैं ?

आखिर में यह हुआ कि अल्लाह पाक आप को हिदायत नेक अता करे, कुर्आन पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफीक दे ताकि दूसरों को सहीह रास्ता दिखा सकें वरना वही मिसाल दुरुस्त होगी कि कोई नाबीना किसी को रास्ता दिखाने में जिद करे, कोई लंगड़ा दौड़ में हिस्सा लेने आगे आए।

वस्सलाम – हम हैं आपके खैरख्वाह भाई

हलीम अहमद/डॉ अफजल खान

१.२.२००८

यह ख़त उर्दू में है इसे हिन्दी लिपि में जैसे का तैसा नक़्ल कर दिया गया ताकि पढ़े लिखे लोग ख़त लिखने वाले की इल्मी क़ाबिलियत समझ सकें।

इस ख़त के साथ तक़रीबन २० सफ़हात क़ादियानी लिट्रेचर की फोटू कापियां हैं जो हमारी किताब "क़ादियानीयत से सावधान का जवाब तो नहीं है अलबत्ता कादियानीयत के सुबूत में किताब व सुन्नत से ग़लत इस्तिदलाल का शाहकार हैं। बीस हज़ार, एक हज़ार, एक करोड़ के इनआमात के एअ़लानत भी हैं।

जवाब –

भाई अ़ब्दुल ग़नी से वाक़िफ़ीयत नहीं है। किताब में कुर्आनी आयात की ज़रूरत नहीं पेश आई नहीं लिखी गईं। अहादीस के हवालों में सिर्फ़ किताब के नाम पर इक्तिफ़ा किया गया अगर आप ढूंढ न सकें, लिखें। मुतअ़य्यन हवाले लिख कर भेज दिये जाएंगे। किताब का मक़्सद अपने भाइयों को गुमराही से बचाना और जो भटक गये हैं उनको सीधी राह दिखाना है अब अगर वह ग़लत राह ही पर चलना चाहें तो वह जानें। हम भाई अ़ब्दुल ग़नी से वाक़िफ़ नहीं, क़ुर्आन मजीद तो वह ज़रूर पढ़ते होंगे लेकिन हो सकता है आ़लिम न हों और क़ुर्आनी आयात पर कुछ गुफ़्तगू न कर सकते हों। आप लोग ऐसे ही भाइयों की तलाश में रहते हैं जो आ़लिम न हों मगर दीन्दार हों क़ुर्आन का एहतिराम करते हों, इस एहतिराम से फ़ाइदा उठाते हुए आप उन को आयत पढ़ कर सहाब–ए–किराम और अस्लाफ़ की तफ़्सीर से हट कर, मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी के गुमराह कुन निकात से वरग़लाते हैं फिर उस के साथ हदीयों तुहफ़ों की भरमार कर के उचक लेते हैं इस तरह ख़ुद तो भटके थे ही दूसरे

को भी भटका कर इस क़ौल के मिस्दाक़ बनते हैं कि –

ख़ुद तो डूबे हैं पर यार को भी ले डूबें गे।

मैंने आपके भेजे हुए औराक़ न तो ग़ुस्से और नफ़रत से फाड़े न लौटाए बल्कि आप के आक़ाओं की जिहालत के सुबूत में महफ़ूज़ कर लिये और सच्चा राही में छत्तीसगढ़ के क़ादियानियों की हिदायत और अपने भाइयों की हिफ़ाजत के लिये क़िस्तवार छापेंगे। आपसे दर्ख़्वास्त है कि मुकम्मल नम्बर भेजिये ताकि आप की जुम्ला गुमराहियां आप के सामने रखी जा सकें हो सकता है आप को तौबा नसीब हो। आप ने लिखा है, "या तौबा किया जाए या फिर अहमदीयत में दाख़िल हो कर नेक अमल ख़िलाफ़त के ताबिअ रह कर बजा लाया जाए।" यह इबारत और इस में या के इस्तिअमाल को अपने उस्ताद को दिखा कर दाद लीजिए। अगर आप को उर्दू नहीं आती तो अरबी में लिखिये और अरबी भी नहीं आती तो सर फोड़ लीजिए। तौबा का दरवाजा खुला है तौबा कीजिए मिर्ज़ा ग़ुलाम की नुबुव्वत से तौबा कीजिये, ख़िलाफ़ते शैतानीया से ख़ुदा की पनाह मांगिये और उस ख़िलाफते राशिदा की तअलीमात से फ़ाइदा उठाइये जिस के पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिर्ज़ा ग़ुलाम के मअ्नवी जदद मुसैलमा कज़्ज़ाब का क़लअ़ कमअ़ किया था।

मियां तैरना जानने वाले को भी समन्दर में छलांग लगाकर किसी समन्दरी जानवर का शिकार नहीं बनाना चाहिए।

जमाअ़ते मिर्ज़ाइया क़ुर्आन व हदीस से नहीं बात करती बल्कि शैतान की पैरवी में क़ुर्आन व हदीस पढ़कर उस के मुहर्रफ़ मअ्ना से उम्मत को वरग़ला कर शैतान के गिरोह में शामिल करती हैं। जिस से हम अपने रब की पनाह चाहते हैं। हम उम्मत को क़ुर्आन व हदीस का वही मतलब पेश करते हो जो सहाब–ए–किराम और ताबेअ़ीने इज़ाम से हम को मिला।

आख़िर में हम दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह हक़ देखने में नाबीना मिर्ज़ाइयों को हक़ देखने की बीनाई अ़ता फ़रमा और उन के शर से उम्मत को महफ़ूज़ फ़रमा। आप ने इश्तिहार भेजा है कि "जो मौलवी इस सदी से क़ब्ल मसीह को आस्मान से उतार दे उस को एक करोड़ रूपया दूंगा।" मैं कहता हूं यह मुतालबा उस से कीजिए जो कहता हो कि हज़रत मसीह इसी सदी में उतरें गे, उ़लमाए उम्मत तो वक़्त मुअ़य्यन नहीं करते। लीजिए हमारा एअ़लान भी सुन लीजिए। हदीस में आता है कि हज़रत महदी का नाम मुहम्मद और उनके वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह होगा, लिहाज़ा दुन्या के पर्दे पर जो क़ादियानी साबित कर दे कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद के बाप का नाम ग़ुलाम मुर्तज़ा नहीं था तो उस को एक करोड़ इनआम दिया जाएगा। साथ ही अपने भाइयों से दर्ख़्वास्त है कि वह इस तहरीर की बुन्याद पर लड़ाई झगड़ा हरगिज़ न करें उनको जो कुछ लिखना होगा मुझे लिखेंगे।

एक वाक़िअ़:

अभी कुछ पहले हमारा सफ़र मदरसा नूरूल इस्लाम जलपापुर सन्सारी नैपाल का हुआ। वहां से थोड़े फ़ासिले पर मुसलमानों की ग़रीब बस्ती में कुछ क़ादियानी पहुंचे और उनके बच्चों को मुफ़्त तअ़लीम की इजाज़त मांगी और अपने को अहमदी मिशन का मुबल्लिग़ बताया। उन लोगों ने कहा तुम लोग तो क़ादियानी हो और मुसलमान नहीं हो, क़ादियानियों ने जवाब दिया कि हम मुसलमान हैं, क़ुर्आन पढ़ते पढ़ाते हैं। गांव वालों ने कहा अच्छा हम लोग तो पढ़े लिखे हैं नहीं, तुम मदरसा नूरूल इस्लाम चलेजाओ और मदरसे वालों से लिखा लाओ कि तुम मुसलमान हो, फिर शौक़ से हमारे बच्चों को पढ़ाओ, इस के बिना अगर आए तो उन्होंने अपनी बोली में कहा कि "हम लट्ठी से तुम्हारी टंगरी तोड़ देंगे।"

(पृष्ठ ४० का शेष)

तक वहां १० लोगों की मौत हो चुकी है। इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में आई बाढ़ से तकरीबन १५ सौ लोग बेघर हो गए हैं। तेज हवा और भारी बर्फबारी होने से ब्रिटेन के कई इलाकों में भी जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया है।

अमेरिका के शिकागो शहर के एयरपोर्ट में १६ सेंटीमीटर बर्फ जमा होने के कारण गुरूवार को ६०० और शुक्रवार को ५०० उड़ानें निरस्त कर दी गई हैं। शहर में सड़कों पर बर्फ जमा होने के कारण हजारों यात्रा एयरपोर्ट पर ही रात गुजारने को मजबूर हैं। उधर, जकार्ता में हर तरफ पानी ही पानी दिख रहा है, जिससे जनजीवन पूरी तरह थम गया है। यहां तक कि वहां के राष्ट्रपति भी घर में नजरबन्द से हो गये हैं। दूसरी ओर ब्रिटेन के डरहम की सड़ों पर १५ सेंटीमीटर बर्फ जमी है। राहत एवं बचाव दल ने अब तक ३७ लोगों को बाहर निकाला है।

●●●

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

अमेरिकी सेना में बढ़ रही हैं आत्महत्याएं

इराक युद्ध का पड़ा गहरा असर

वाशिंगटन। इराक युद्ध शुरू होने के बाद से अमेरिकी सेना में आत्महत्याएं करने की घटनाएं बढ़ी हैं। यह खुलासा सेना की एक रिपोर्ट ने की है।

अखबार वाशिंगटन पोस्ट के मुताबिक २००७ में १२१ जवानों ने आत्महत्याएं कीं। यह संख्या २००६ के मुताबिक २० फीसदी ज्यादा हैं। इनके अलावा करीब २१०० सैनिकों ने आत्महत्या की कोशिश की, जबकि वर्ष २००२ में यह आंकड़ा ३५० था। रिपोर्ट में कहा गया है कि इराक और अफगानिस्तान में जंग लड़ने गए सैनिकों में आत्महत्या की प्रवृत्ति ज्यादा देखी गई है क्योंकि वे जबरदस्त तनाव में काम करते हैं। खास बात यह कि इराक में तैनाती के दौरान ज्यादा सैनिक आत्महत्या नही करते, बल्कि अमेरिका में तैनाती के दौरान वे यह कदम उठाते हैं।

इराक युद्ध ने लीं दस लाख जानें

लंदन : हाल ही में अमेरिका में प्रकाशित हुई रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष २००३ से अब तक इराक में युद्ध के कारण १० लाख से अधिक लोग मारे जा चुके हैं।

इंडीपेंडेंट इन्सटीट्यूट फॉर रिसर्च एण्ड सिविल सोसायटी स्टडीज की ओर से किए गए शोध के नतीजों के मुताबिक मार्च २००३ से अगस्त २००७ तक प्रत्येक पांच इराकी परिवारों में एक परिवार ने अपने निकट संबंधी को युद्ध के कारण खो दिया है। शोध कम्पनी ने इस सर्वे के १८ वर्ष व उससे अधिक उम्र के २,४१४ इराकियों से बातचीत की। इसके लिए वर्ष १९७७ में हुई जनगणनों की भी मदद ली गई। सर्वे में लोगों से युद्ध के कारण मरने वाले उनके परिवारीजनों के बारे में पूछताछ की गई। सर्वे में अन्य कारणों से हुई मौतों को शामिल नहीं किया गया है। कंपनी का कहना है कि मार्च २००३ से अगस्त २००७ तक युद्ध के कारण मारे गए लोगों की संख्या दस लाख ३३ हजार के करीब है।

इस्लाम विरोधी पुस्तकों की बिक्री पर प्रतिबन्ध

कुआलालम्पुर। मलेशिया सरकार ने अमेरिकी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित ११ किताबों की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। सरकार के मुताबिक इन किताबों में इस्लाम विरोधी बातें लिखी हुई हैं और इस्लाम को गलत तरीके से पेश किया गया है। इन ११ किताबों में आठ अंग्रेजी भाषा में हैं।

अफगानिस्तान में और सैनिक नहीं भेजेगा जर्मनी

अमेरिका का आग्रह ठुकराया

अफगानिस्तान में आतंकवादियों के खिलाफ जारी जंग को लेकर नाटो के सदस्य देशों में मतभेद बढ़ते दिख रहे हैं। जर्मनी ने यहां और सैनिक भेजने का अमेरिका का आग्रह ठुकरा दिया है। जर्मनी ने कहा कि अमेरिका को उत्तर की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अफगानिस्तान में तालिबान फिर से सक्रिय हो गया है। वह धीरे–धीरे राजधानी काबुल की ओर बढ़ रहे हैं। इसे देखते हुए अमेरिकी रक्षा मंत्री रॉबर्ट गेट्स ने जर्मनी से सैनिकों की संख्या बढ़ाने को कहा था। जर्मनी के रक्षा मंत्री फ्रैंज जोसेफ जंग ने इस पर कहा कि अफगानिस्तान में फिलहाल हमारे ३२०० सैनिक की तैनात रहेंगे और अमेरिका व अन्य नाटो देशों को उत्तरी हिस्से पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। जर्मनी का यह रुख उस सर्वेक्षण के बाद दिखा है जिसमें काफी बड़ी संख्या में लोगों ने कहा था कि अफगानिस्तान और इराक में तैनात जर्मनी सैनिकों को वापस बुला लेना चाहिए।

कई अन्य देशों में भी प्रकृति का प्रकोप

शिकागो / जकार्ता / लंदन। दुनिया के कई देश इस वक्त प्रकृति का कहर झेल रहे हैं। अमेरिका में आए बर्फीले तूफान से वहां जीवन पूरी तरह थम गया है। हर तरफ बर्फ जम जाने से रेल और सड़क यातायात बुरी तरह बाधित हुआ है। तूफान के कारण अब

(शेष पृष्ठ ३६ पर)